मतांतरण में लगे गिरोह का भंडाफोड़ 10

बीएचयू ने किया गंगाजल से कोरोना ठीक होने का दावा 13

डा.मोहन भागवत का संपूर्ण उद्बोधन 16

पाक्षिक

₹ 5

पाथेय कण

www.patheykan.com

आषाढ़ शु.6/7, वि.2078, युगाब्द 5123, 16 जुलाई, 2021

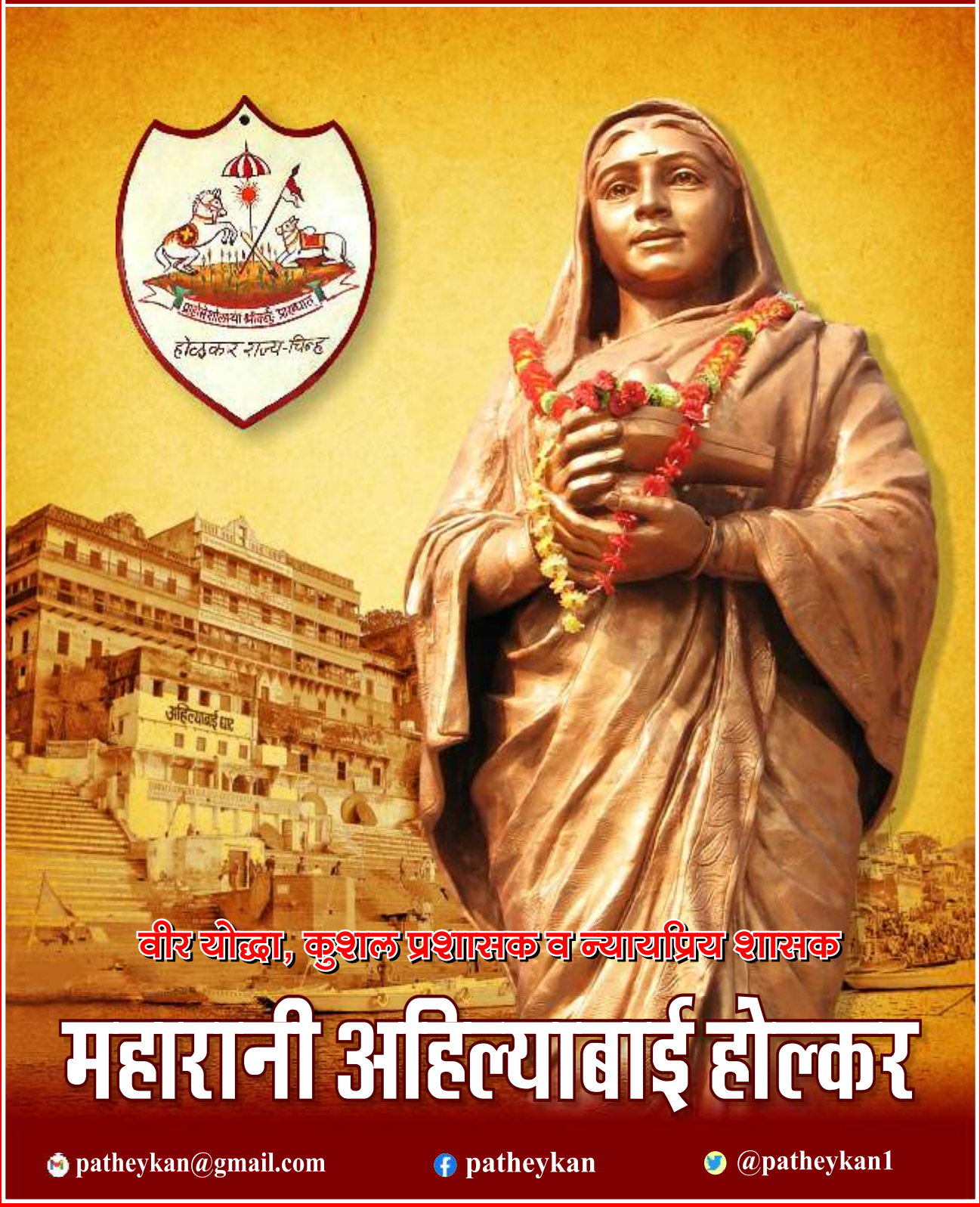

वीर योद्धा, कुशल प्रशासक व न्यायप्रिय शासक

महारानी अहिल्याबाई होल्कर

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

श्री गुरूजी छात्रावास

उ.मा. आदर्श विद्या मन्दिर

आदर्श नगर, जयपुर

प्रवेश प्रारम्भ

हमारी विशेषताएँ :-

1. प्रत्येक कक्ष में 4 छात्रों के रहने की व्यवस्था
2. पूर्णतया अनुशासित वातावरण
3. शुद्ध एवं उच्च गुणवत्तायुक्त भोजन
4. कमजोर छात्रों के लिए विशेष शिक्षण की व्यवस्था
5. खेलों के लिए विस्तृत मैदान एवं उपयुक्त खेल सामग्री
6. योग्य खेल प्रशिक्षक
7. रायफल शूटिंग रेंज
8. विषय विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन
9. नित्य योग की कक्षाएं
10. साप्ताहिक विशेष भोजन की व्यवस्था
11. स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण
12. शैक्षिक उन्नयन हेतु विशेष कक्षाएं
13. एन.सी.सी.
14. बॉक्सिंग एकेडमी

छात्रावास शुल्क :
56,000/- रु. वार्षिक
(तीन किस्तों में देय)

भोजन

प्रात: दूध, दलिया, पोहे, जलेबी, हलुआ
भोजन : चावल, चपाती, दही, सब्जी, सलाद
अपरान्ह : 4 बजे फलाहार
प्रत्येक रविवार : विशेष भोजन
प्रत्येक त्यौहार : विशेष भोजन

छात्रावास के भैयाओं की उपलब्धियाँ

1. भैया सिद्धार्थ चारण	R.A.S.	12. " बाबूसिंह भाटी	M.B.B.S.
2. " तिलक जोशी	N.D.A.	13. " राजेन्द्र कालिया	M.B.B.S
3. " साकेत	I.I.T.	14. " खींवसर भाटी	M.B.B.S
4. " नितेश गुप्ता	C.A.	15. " नवनीत सारण	M.B.B.S.
5. " रौनक जैन	C.A.	16. " शंकर चौधरी	M.B.B.S
6. " राहुल खण्डेलवाल	C.A.	17. " विकास शर्मा	M.B.B.S
7. " अंकित शर्मा	C.A.	18. " टीनू पोषवाल	M.B.B.S.
8. " वैंकटेश दासवानी	M.B.B.S.	19. " महिपाल कालिया	M.B.B.S.
9. " तेजवीर गुर्जर	M.B.B.S.	20. " यश दासवानी	M.B.B.S.
10. " जितेन्द्र शर्मा	M.B.B.S.	21. " धर्मेन्द्र गुर्जर	M.B.B.S.
11. " अमित खण्डेलवाल	M.D.S.	22. " अमरेश गुर्जर	M.B.B.S.

छात्रावास की खेलों में उपलब्धियाँ

1.	भैया सोमवीर सिंह	नेशनल स्कूल गेम्स	फुटबाल 2010
2.	" शुभम् चौधरी	" "	"
3.	" सचिन शेखावत	" "	पिस्टल शूटिंग 2013
4.	" कोविद सोलोत	" "	पिस्टल शूटिंग 2014
5.	" विकास जाट	" "	पिस्टल शूटिंग 2015-16
6.	" यश दासवानी	" "	"
7.	" सौरभ खटाणा	" "	"
8.	" कोविद सोलोत	" "	बीच वॉलीबाल 2016-17
9.	" टीनू पोषवाल	" "	"
10.	" विकास जाट	" "	रस्साकसी, कास्य पदक 2016
11.	" अनिल वैष्णव	" "	"
12.	" विकास यादव	" "	"
13.	" देवेन्द्र नेहरा	" "	"
14.	" उद्देश्य गुर्जर	" "	रस्साकसी, रजत पदक 2016
15.	" रवि चौधरी	" "	"
16.	" पुष्पेन्द्र स्वामी	" "	"
17.	" आशाराम चौधरी	" "	"
18.	" कोविद सोलोत	" "	बीच वॉलीबाल 2017
19.	" मोहन वर्मा	" "	बीच वॉलीबाल 2016-17
20.	" किशन चौधरी	" "	"
21.	" जितेन्द्र चौधरी	" "	किक बॉक्सिंग 2018
22.	" अजय पंवार	" "	"
23.	" हीरामन	" "	राइफल शूटिंग

SGFI में रस्सा खींच में रजत एवं कांस्य पदक विजेता दल

शूटिंग एकेडमी

अटल ट्रिंक्रिंग लैब

विद्यालय के भैया बहिनों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की झलकियाँ

बॉक्सिंग एकेडमी

सम्पर्क-रामानंद चौधरी मो.97993 94656, 8003377251

पाक्षिक
पाथेय कण

आषाढ़ शु.6/7 से श्रावण कृ. 8
वि.सं.2078, युगाब्द 5123

16-31 जुलाई, 2021
वर्ष 37 : अंक 07

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)
मो. 9929722111

अंक नहीं मिलने की सूचना अपने नाम व पते सहित व्हाट्सएप (WhatsApp) द्वारा निम्नलिखित मो.न. पर दें।
7976582011

E-mail : patheykan@gmail.com
Website : www.patheykan.in

बात समान नागरिक संहिता की

समान नागरिक संहिता लागू करने का मुद्दा एक बार फिर चर्चा में है। 9 जुलाई, 2021 को दिल्ली उच्च न्यायालय ने तलाक संबंधी एक मुकदमे की सुनवाई करने के दौरान देश में समान नागरिक संहिता लागू करने की आवश्यकता बताई। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह की पीठ ने इस संबंध में केन्द्र सरकार को जरूरी कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

उल्लेखनीय है कि संविधान के अनुच्छेद 44 में राज्य को निर्देश दिया गया है कि वह सभी धर्मों के लोगों पर समान व्यक्तिगत कानून लागू करे। विवाह, तलाक, भरण-पोषण, संपत्ति का बंटवारा, दत्तक, उत्तराधिकार आदि से संबंधित नियम-कानून व्यक्तिगत विधि के क्षेत्र में आते हैं। वर्तमान में इससे संबंधित कानून हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि धर्मों के लोगों के लिए अलग-अलग हैं। विद्वान न्यायाधीश प्रतिभा सिंह ने कहा कि यह सही समय है जब समान नागरिक संहिता लागू कर दी जानी चाहिए।

1955-56 में जब हिंदुओं की व्यक्तिगत विधि में व्यापक सुधार करते हुए कानून बनाए गए थे तब मांग उठी थी कि सभी धर्मों की व्यक्तिगत विधि में सुधार करते हुए एक समान विधि लागू की जाए, परन्तु ऐसा नहीं हुआ।

1985 के प्रसिद्ध शाहबानो मामले में देश के सर्वोच्च न्यायालय ने भी समान विधि बनाने पर जोर दिया था। परन्तु भाजपा को छोड़कर कांग्रेस सहित अन्य राजनैतिक दल मुस्लिम तुष्टीकरण एवं वोटों की राजनीति के चलते समान नागरिक संहिता का समर्थन नहीं करते दिखाई देते हैं।

मुसलमान आमतौर पर समान नागरिक संहिता को अपने धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप के रूप में देखते हैं। उनका कहना है कि मुसलमान कानून 'शरीयत' किसी का बनाया हुआ नहीं है बल्कि यह अल्लाह के आदेश के अनुसार है। परन्तु विधि आयोग के पूर्व सदस्य तथा मुस्लिम विधि पर कई पुस्तकों के लेखक प्रोफेसर ताहिर महमूद कहते हैं,''मुसलमान जिसे अपना धार्मिक कानून समझ रहे हैं वह वास्तव में तो अंग्रेजों का तैयार किया हुआ है और कई जगह वह कुरान के आदेश के विपरीत भी है।''

भारत के अतिरिक्त संसार में शायद ही कोई देश होगा जहां अलग-अलग सम्प्रदायों के लिए अलग-अलग कानून हों। अमेरिका व अन्य पश्चिमी देशों में एक ही व्यक्गित कानून लागू है जिसे वहां रह रहे मुसलमान, हिंदू सहित सभी को मानना होता है।

संविधान सभा में कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने कहा था, ''तुर्की या मिस्र आदि किसी भी उन्नत मुस्लिम देश में किसी भी अल्पसंख्यक समुदाय को पृथक विधि का अधिकार प्राप्त नहीं है, जैसे अधिकार भारतीय अल्पसंख्यकों को प्राप्त हैं।'' प्रख्यात कानूनविद एवं विद्वान श्री अल्लादि कृष्णास्वामी अय्यर ने भी संविधान सभा में बोलते हुए कहा, ''यह आशंका निराधार है कि समान नागरिक संहिता लागू की गई तो कोई धर्म खतरे में पड़ जाएगा।''

व्यक्तिगत विधि विषय संविधान की समवर्ती सूची में होने के कारण कोई एक या अधिक राज्य भी अपने राज्य के लिए समान नागरिक संहिता लागू कर सकते हैं। दृष्टव्य है कि गोवा राज्य में 1962 से ही सभी धर्मों के लोगों पर समान व्यक्तिगत विधि लागू है जिसका पालन करने में हिंदू, मुसलमान सहित किसी भी धर्मावलम्बी को कभी कोई ऐतराज नहीं हुआ। इसकी प्रशंसा करते हुए भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे ने 28 मार्च, 2021 को गोवा

... शेष पृष्ठ 6 पर

ज्ञान गंगा

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात् परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्।।

उत्साह ही बलवान होता है। उत्साह से बढ़कर दूसरा कोई बल नहीं है। उत्साही पुरुष के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

(वाल्मीकि रामायण/किष्किन्धाकाण्ड- प्रथम सर्ग/121)

पुण्यतिथि (13 अगस्त) पर विशेष

वीर योद्धा, कुशल प्रशासक व न्यायप्रिय शासक

महारानी अहिल्याबाई होल्कर

महारानी अहिल्याबाई होल्कर की गणना भारत की महान महिला शासकों में की जाती है। उन्होंने इंदौर-मालवा क्षेत्र में 30 वर्षों तक राज किया। वे एक धर्मपरायण, न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, बहादुर योद्धा और कुशल राजनीतिज्ञ थीं।

पिता ने सिखाया लिखना-पढ़ना

अहिल्याबाई का जन्म चौंडी गांव में 31 मई, 1725 को हुआ था। चौंडी गांव वर्तमान में महाराष्ट्र के अहमद नगर जिले के जामखेड में स्थित है। अहिल्या का जन्म किसी राजवंश में नहीं हुआ था। अहिल्या के पिता मानकोजी शिंदे धनगर जाति के एक साधारण परन्तु संस्कारवान व्यक्ति थे। (कई इतिहासकारों ने उन्हें चौंडी गांव का मुखिया 'पाटिल' भी लिखा है।) उन दिनों गांवों में लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता था, परन्तु अहिल्या के पिता ने उसे घर में ही लिखना पढ़ना सिखाया।

राज परिवार से संबंध

एक बार तत्कालीन मालवा के सूबेदार मल्हारराव होल्कर पुणे जाते समय चौंडी गांव विश्राम के लिए रुके। उन्होंने भूखे-गरीब लोगों को खाना खिला रही आठ वर्षीय अहिल्या को देखा। उसके संस्कार और आचरण से प्रभावित होकर मल्हारराव ने अहिल्या का रिश्ता अपने बेटे खांडेराव के लिए मांगा। इस प्रकार 8 वर्षीय अहिल्या का विवाह एक राजकुमार से हो गया और वे राजघराने की सदस्य बन इंदौर आ गईं।

मल्हार राव अपनी पुत्रवधू अहिल्या की बुद्धि और चतुराई से प्रसन्न थे। उसे भी उन्होंने राजकाज की शिक्षा दी।

इंदौर की शासक बनी

मल्हारराव के जीवित रहते ही अहिल्या के पति खांडेराव की मृत्यु कुम्हेर के युद्ध में हो गई थी। मल्हारराव की मृत्यु होने के बाद राज्य की बागडोर अहिल्याबाई के बेटे मालेराव ने संभाली। परन्तु 1767 में उसकी भी मृत्यु हो गई। तब अहिल्याबाई ने इंदौर-मालवा की शासन व्यवस्था अपने हाथ में लेने के लिए पेशवा के समक्ष याचिका प्रस्तुत की। पेशवा की अनुमति मिलने पर 11 दिसम्बर, 1767 को वे स्वयं इंदौर की शासक बनी।

बहादुर योद्धा

लोगों को उनकी बहादुरी का परिचय शासन के पहले वर्ष में ही हो गया था जब उन्होंने मालवा के लोगों की रक्षा उन्हें लूटने वालों से की।

वे एक कुशल तीरंदाज तथा बहादुर योद्धा थीं। उन्होंने कई युद्धों में अपनी सेना का नेतृत्व किया। वे अपने पति के साथ भी युद्धों में जाया करती थीं। वे हमेशा ही अपने साम्राज्य को मुस्लिम आक्रमणकारियों से बचाने की कोशिश करती थीं।

देशभर में मंदिर-धर्मशालाएं बनवायीं

वे किसी बड़े राज्य की शासक नहीं थीं, परन्तु उन्होंने जो कुछ भी किया वह आश्चर्यचकित कर देने वाला है। 'भारतीय संस्कृति कोष' के अनुसार उन्होंने न केवल इंदौर बल्कि देशभर में कई विकास कार्य करवाये।'

अहिल्याबाई ने भारत के उत्तर से लेकर दक्षिण तक प्रसिद्ध तीर्थों में मंदिर तथा धर्मशालाएं बनवाई। इनमें काशी विश्वनाथ मंदिर, द्वारिका में शिव मंदिर,

गया में विष्णु मंदिर, बनारस का अन्नपूर्णा मंदिर तथा अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, कांची व रामेश्वरम् में मंदिर निर्माण उल्लेखनीय हैं। उन्होंने पवित्र नदियों के घाट बनवाए। कुँओं, बावड़ियों, बांधों और तालाबों का निर्माण कराया।

अहिल्याबाई ने तीर्थ क्षेत्रों में भूखे-गरीब लोगों के लिए सदाव्रत (अन्न क्षेत्र) तथा पीने के पानी की प्याऊ बनवाई। मंदिरों में शास्त्रों का चिंतन-मनन तथा प्रवचन होता रहे, इसके लिए विद्वानों की नियुक्ति की।

कला व साहित्य का विकास

उनके शासनकाल में कला, संगीत व साहित्य का विकास भी हुआ। उनकी राजधानी माहेश्वर इन सबका केन्द्र बन गई थी। उन्होंने मेरठ के कवि मोरोपंत, संस्कृत के विद्वान खुशालीराम तथा शाहिर अनंतफंदी जैसे विद्वानों को संरक्षण एवं सम्मान दिया।

विकास कार्य

उनके शासनकाल में लोगों ने एक छोटा से गांव इंदौर को विकसित शहर में बदलते देखा। मालवा में किले व सड़कें बनवाने का कार्य अहिल्याबाई ने किया।

उनके शासन काल में उद्योग-धंधे फले-फूले तथा किसान आत्मनिर्भर बने। वाणिज्य की अभिवृद्धि पर पूरा जोर था। किसानों को शीघ्र न्याय देने की व्यवस्था की गई।

गांव में पंचायत-व्यवस्था, कोतवाल व पुलिस व्यवस्था तथा न्यायालयों की स्थापना उनके शासनकाल में की गई।

एनी बेसेंट लिखती हैं, '' उनके राज में सड़कें दोनों तरफ वृक्षों से घिरी रहती थीं। राहगीरों के लिए कुएं और विश्राम घर बनवाये गए। गरीब, बेघर लोगों की जरूरतें हमेशा पूरी की गईं। आदिवासी कबीलों को उन्होंने जंगलों का जीवन छोड़कर गांवों में किसान के रूप में बस जाने के लिए मनाया।

परम शिव भक्त

वे भगवान शिव की अनन्य भक्त थीं। शिवपूजन किए बिना पानी की एक बूंद भी मुँह में नहीं लेती थीं। अपना राज्य उन्होंने शंकर भगवान को अर्पित कर रखा था और स्वयं उनकी सेविका बनकर शासन चलाती थीं। इसी कारण से राज-आज्ञाओं पर अपने नाम से हस्ताक्षर करने के बजाय वे 'शंकर' लिख देती थीं। उनके रुपयों पर शिवलिंग और बिल्व का चित्र तथा सिक्कों पर नंदी का चित्र अंकित रहता था।

सादा जीवन

वे सफेद वस्त्र धारण करती थीं तथा उनका रहन-सहन सादा रहता था। शरीर पर किसी प्रकार के जेवर धारण करने से परहेज करती थीं। भगवान की पूजा करना, अच्छे ग्रंथों को सुनना तथा राजकाज के माध्यम से लोगों के कल्याण हेतु कार्य करना उनकी दिनचर्या में शामिल था। उनका सारा जीवन वैराग्य, कर्तव्य पालन और परमार्थ के लिए ही था।

महिला सशक्तिकरण

अहिल्याबाई ने समाज में स्त्रियों की दशा सुधारने तथा उन्हें सशक्त करने के लिए कई कार्य किए। उस समय पुत्रविहीन महिला के पति की मृत्यु पर उसकी सारी संपत्ति राजकोष में जमा कर देने का नियम था। अहिल्याबाई ने इस नियम को बदला तथा ऐसी विधवाओं को पति की संपत्ति की उत्तराधिकारी मानकर उन्हें अपने अनुसार संपत्ति के उपयोग की छूट दी। पवित्र नदियों पर जहाँ-जहाँ भी उन्होंने घाट बनवाए, वहाँ स्त्रियों के लिए अलग व्यवस्था की गई। उनके शासनकाल में स्त्री शिक्षा का विस्तार हुआ।

पर्यावरण जागरूकता

कहा जाता है कि महारानी अहिल्याबाई पार्थिव (मिट्टी के) शिवलिंग बनाकर प्रतिदिन पूजन करती थीं। पूजा के बाद नर्मदा नदी में इनका विसर्जन होता था। वे इन शिवलिंगों में अनाज के दाने या बीज रख देती थीं ताकि नदी तल में दाने या बीज जाने पर समुद्री जीवों का पोषण हो। यदि बीज बहाव से किनारे आ जाए तो अंकुरित होकर हरियाली बढ़ाए।

इतिहासकार गणेश मतकर के अनुसार अहिल्याबाई ने किसानों को आदेश दिया था कि खेत की मेढ़ पर 20-20 छायादार और फलदार पेड़ लगाए जाएं। इनमें नींबू, गुलर, बरगद, आम, इमली को प्राथमिकता दी गई थी। इससे मिट्ठी का क्षरण भी नहीं होता था तथा हरियाली के साथ ही कृषकों को आय भी होती थी।

लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष सुमित्रा महाजन के अनुसार अहिल्याबाई ने मछली, पशु-पक्षी, नदी, तालाब, कुएं-बावड़ी, पेड़-पौधे यहां तक कि मिट्टी के संरक्षण तक की बात की। अपने प्रयासों से पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन को बढ़ाया। वे खेतों का एक भाग पशु-पक्षियों के लिए रखवाती थीं ताकि उनका भरण-पोषण हो सके।

न्यायप्रिय

महारानी अहिल्याबाई की न्यायप्रियता प्रसिद्ध है। प्रजा को सताने वाले को दण्ड देने के स्थान पर समझाने की कोशिश की जाती थी। अपराधियों को सुधारने का कार्य होता। भूमिहीन को भूमि देकर सुधरने का अवसर दिया जाता। न्याय करते समय अपनों को भी नहीं बक्शा जाता था।

अहिल्याबाई लोगों की समस्याओं

को सुनने तथा उनका निराकरण करने के लिए प्रतिदिन सार्वजनिक सभा करती थीं।

कुशल प्रशासक

प्रजा से न्यूनतम 'कर' की वसूली की जाती थी। 'कर' का उपयोग केवल प्रजाहित के कार्यों हेतु ही किया जाता था। वे अपने को प्रजा की मालकिन नहीं बल्कि संरक्षक मानती थीं। वे प्रजा के सुख-दुःख की जानकारी करती रहती थीं और न्यायपूर्वक निर्णय करती थीं। महारानी अहिल्या मानती थीं कि प्रजा का संतोष ही राज्य का मुख्य कार्य है। वे प्रजा की देखभाल अपनी संतान की तरह ही करती थीं।

देवीरूप में मान्यता

महारानी अहिल्याबाई के विचार, आचरण, रहन-सहन, न्यायप्रियता तथा प्रजावत्सलता व धर्म परायणता को देखकर लोग उन्हें 'देवी' मानने और कहने लगे थे। लोगों की आज भी आस्था है कि यदि अकाल पड़ा तो अहिल्या बाई के गुप्त खाद्यान्न भंडार खुल जाएंगे तथा कोई भूख से नहीं मरेगा।

उनकी पुण्यतिथि भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी पर अहिल्योत्सव मनाया जाता है। अहिल्याबाई की दानशीलता, न्यायप्रियता और योग्य शासन के किस्से जनश्रुतियों और लोककथाओं में मिलते हैं। इन किस्सों में कई चमत्कारिक भी लगते हैं।

दूरदर्शी राजनेता

महारानी अहिल्या कुशल राजनीतिज्ञ भी थीं। जब मराठा-पेशवा अंग्रेजों की नीयत भांप नहीं पाए तो उन्होंने 1772 ई. में एक पत्र लिखकर अंग्रेजों से सावधान रहने को कहा। उन्होंने अंग्रेजों को भालू की संज्ञा देते हुए कहा है कि भालू ही जंगल का सबसे खतरनाक जानवर होता है जो गुदगुदी करते-करते अपने शिकार का अंत कर देता है।

पूरे भारत में सम्मान

अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं से बाहर जाकर भी विकास कार्यों के साथ ही मंदिरों, धर्मशालाओं, घाटों आदि के निर्माण व मानव कल्याण के कई कार्य करवाए थे, इसलिए भारत सरकार तथा कई राज्य सरकारों ने उनकी न केवल प्रतिमाएं बनवाई वरन् उनकी स्मृति को चिर-स्थाई बनाने के लिए कई शैक्षणिक व अन्य संस्थाओं और योजनाओं के साथ उनका नाम जोड़ा। इंदौर में विश्वविद्यालय, केन्द्रीय पुस्तकालय, हवाईअड्डा आदि के साथ देवी अहिल्याबाई होल्कर का नाम जोड़ा गया है। जवाहर लाल नेहरू ने अहिल्याबाई के लिए लिखा है, ''उन्होंने इंदौर पर तीस वर्षों तक शासन किया। यह समय सुशासन और व्यवस्था की दृष्टि से यादगार माना जाता है। वे एक बेहद शानदार शासक और प्रबंधक थीं। पूरी जिंदगी लोगों के बीच बेहद सम्माननीय रहीं तथा मृत्यु के बाद एक संत के तौर पर याद की जाती हैं।'' अहिल्याबाई होल्कर भारत माता की वह बेटी थी जिसने धर्म का संदेश फैलाया, संस्कृति व पर्यावरण संरक्षण, स्त्री शिक्षा तथा महिला सशक्तिकरण के साथ ही औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया। वे एक बहादुर योद्धा तो थीं ही, प्रभावी राजनीतिज्ञ भी थीं।

उन्होंने बड़ी कुशलता से अपना शासन चलाया। उनकी गणना आदर्श शासकों में की जाती है। वे अपनी उदारता और प्रजावत्सलता के लिए प्रसिद्ध थीं। वे युगों-युगों तक देश के शासकों के लिए एक आदर्श प्रेरणास्रोत बनी रहेंगी। ●

सम्पादकीय का शेष...

उच्च न्यायालय के एक भवन का उद्घाटन करते हुए कहा, ''मुझे खुशी है कि गोवा के पास वह है जिसकी कल्पना संविधान निर्माताओं ने पूरे देश के लिए की थी।''

हाल ही में 60 वें गोवा मुक्ति दिवस पर भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ गोविंद ने भी कहा, ''गोवा के लिए यह गर्व की बात है कि उसके नागरिकों ने समान नागरिक विधि को अपनाया।''

हैदराबाद की नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो.फैजान मुस्तफा कहते हैं,''हमें देखना होगा कि क्या हमारा कानून 'जेंडर जस्ट' (लैंगिक न्यायोचित) है? क्या यह महिलाओं के साथ न्याय करता है? हमें समान नागरिक संहिता नहीं बल्कि 'जस्ट कोड'(न्यायोचित संहिता) चाहिए।'' डॉ. फैजान मुस्तफा की बात में दम है। वे आगे कहते हैं कि हमारा मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत विधि में सुधार करना है। यदि एक झटके से (समान नागरिक संहिता) लागू करेंगे तो कट्टरपंथी इस मुद्दे को हाईजैक कर लेंगे। अच्छा यह होगा कि छोटे-छोटे सुधार किए जाएं। कभी विवाह की उम्र संबंधी, तो कभी तलाक के बारे में, तो कभी शादी के रजिस्ट्रेशन के बारे में सुधार कर दें। लगता है मोदी सरकार ने तीन तलाक पर प्रतिबंध का कानून लाकर इसी दिशा में अपने कदम बढ़ाए हैं। बम्बई उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा भारत के पूर्व विदेश मंत्री श्री एमसी छागला ने समान नागरिक संहिता सहित सभी नीति निदेशक सिद्धान्तों को महत्वपूर्ण बताते हुए लिखा है, ''यदि इन सिद्धान्तों को लागू कर दिया जाए तो हमारा देश वास्तव में धरती का स्वर्ग बन जाएगा।''

आशा की जानी चाहिए कि केन्द्र और राज्य सरकारें पूर्व न्यायाधीश छागला के इस कथन पर ध्यान देंगी और समान नागरिक संहिता की दिशा में अपने कदम बढ़ाएंगी। ●

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी - 1.नंदीग्राम 2. चक्रव्यूह 3. फारस 4. महानदी 5. भूमि-सूक्त 6. चन्द्रगुप्त मौर्य 7. बाबू देवकीनंदन खत्री 8. डा.चम्पक रमण पिल्लई 9. महाराणा कुम्भा 10. असम

रामंदिर निर्माण के शुभारंभ दिवस (5 अगस्त) पर विशेष

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन
मात्र मंदिर निर्माण के लिए नहीं था

सदियों की स्वप्नपूर्ति का दिन था 5 अगस्त, 2020 जब भारत के प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल व मुख्यमंत्री तथा तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष के मंचीय सान्निध्य एवं देशभर से आए पूज्य संतों व राममंदिर आंदोलन से जुड़े लोगों की उपस्थिति में श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया।

1983-84 से राममंदिर के लिए चला आंदोलन क्या मात्र मंदिर निर्माण के लिए ही था? इस संबंध में प्रस्तुत है श्रीकांत जी का सारगर्भित आलेख

● डॉ. श्रीकांत

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन अयोध्या में मंदिर निर्माण के लिए तो था ही, घोषित रूप से था। लेकिन, इस मन्दिर निर्माण से सारे राष्ट्र को जोड़ना भी था।

मन्दिर से राष्ट्र को और समूचे राष्ट्र को राष्ट्रीय भाव से भी जोड़ना था, प्रभु श्रीराम ने इस देश की उत्तर से दक्षिण की यात्रा करके उसे जोड़ा। देश की एकता, अखण्डता, एकात्मता, समरसता, संस्कृति, संस्कार व परम्पराओं को भी जागृत करने की आवश्यकता थी, इसलिए इन सब बातों के जागरण का भी यह आन्दोलन था।

सम्पूर्ण भारत की सहभागिता

मन्दिर तो अयोध्या में बनना था, परन्तु रामशिला पूजन महाराष्ट्र–गुजरात में भी हुआ था तो कर्नाटक–तमिलनाडु–केरल में भी हो रहा था बंगाल–बिहार–ओड़िशा–असम में भी हुआ था तो कश्मीर–हिमाचल–राजस्थान में भी हो रहा था।

समूचे देश को पता चलाना था कि प्रभु श्रीराम की पावन जन्मभूमि मुक्त नहीं है। श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर स्वतन्त्र भारत में भी स्वतन्त्र नहीं है।

आंदोलन किसी के विरोध में नहीं था

राम मन्दिर आन्दोलन न तो शासन–प्रशासन के विरुद्ध था और न ही किसी अन्य मतावलम्बी के विरोध में। पूरे देश से अयोध्या तक पहुँचने के रास्ते में अनेक मस्जिद आती होंगी, लेकिन इस आन्दोलन के दौरान किसी भी मस्जिद को हाथ नहीं लगाया गया। कहीं पर भी इस समूचे आन्दोलन के दौरान शासन–प्रशासन के विरुद्ध कोई धरना–प्रदर्शन नहीं हुआ। सब कुछ राम मन्दिर और समाज जागरण के लिए था।

राष्ट्रीय स्वाभिमान का जागरण

इसका सम्बन्ध राष्ट्रीय स्वाभिमान के जागरण से भी था। गुलामी का प्रतीक था बाबरी ढांचा। स्वतन्त्र स्वाभिमानी राष्ट्र का नागरिक किसी भी दासता के प्रतीक को सहन नहीं कर सकता। भारत स्वाधीन हुआ तो देश में से विक्टोरिया, जॉर्ज पंचम आदि विदेशी शासकों की मूर्तियाँ–पुतले इत्यादि हटाये गये थे। वास्तव में, उसी समय राष्ट्रीय अस्मिता के इन तीर्थ स्थलों पर बने विधर्मी प्रतीकों को भी हटा देना परम आवश्यक होना चाहिए था। परन्तु नहीं हुआ इसलिए यह करना पड़ा। इस देश में रहने, खाने, पीने वालों को इसका विरोध न कर, गलती सुधार कर साथ देना चाहिए था। परन्तु ऐसा नहीं हुआ, इसलिए राष्ट्र की सामर्थ्य खड़ा करने की आवश्यकता पड़ी।

सकारात्मक भाव निर्माण

1150 वर्ष तक इस्लाम तथा 200 वर्ष तक अंग्रेजी दमन के प्रयास चले। सबसे प्राचीन समाज का अनेक विकृतियों से सम्पर्क हुआ, जिसका कुछ न कुछ दुष्प्रभाव होना तो स्वाभाविक ही था। हमारे धर्म स्थल प्रदूषित किये गये, देश की सामाजिक समरसता में अनेक छिद्र हो गये, जातियों की दीवारें खड़ी हो गईं, ऊँच–नीच का भाव आ गया, समाज में विघटन पनप गया, अपनी इतिहास परम्परा का विस्मरण हो गया, राष्ट्र–महापुरुष–धर्म–संस्कृति आदि के प्रति श्रद्धा–भक्ति में कुछ कमियाँ प्रवेश कर गईं, देशभक्ति का भी व्यापक स्तर पर लोप जैसा हो गया, स्वार्थ व सत्तावलम्बन गहरा होता चला गया।

इन सब बातों के प्रति समाज में एक सकारात्मक भाव पैदा हो सके इसके लिए राम आन्दोलन से अच्छा व सुसंगत कोई दूसरा अभियान नहीं हो सकता था। इस आन्दोलन की जिस प्रकार चरणबद्ध योजना बनी और परिस्थितियों के अनुसार कुशल व प्रत्युत्पन्नमति युक्त नेतृत्व ने जो चरण स्थापित किये उनसे उद्देश्य की दिशा में सफलता मिलती चली गयी।

व्यापक जन –जागरण

सन्तों द्वारा गठित 'श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ संघर्ष समिति' ने 1983 में 'श्रीराम जानकी रथ यात्रा' निकाली थी। अपार जन–समूह इसके साथ चला। 1984 में लखनऊ में एक बड़े कार्यक्रम के साथ यह यात्रा सम्पन्न हो गयी।

आन्दोलन के महामार्ग में मुख्यतः 1989 का शिलान्यास व 1990 व 92 की कारसेवाएं मील के पत्थर की तरह हैं। शिलान्यास के पूर्व श्रीराम शिला पूजन तथा 1990 की कारसेवा के पूर्व श्रीराम खड़ाऊ पूजन व दीपावली पर श्री राम ज्योति घर–घर पहुँचाने के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। ये सभी कार्यक्रम जन–जागरण के निमित्त आयोजित किये गये थे। जन–जागरण हो–हल्ला वाला नहीं था। वह था भारतीय अर्थात् हिन्दू संस्कृति के संस्कार तथा हिन्दू समाज की एकता व एकरसता को पुष्ट करने वाला।

समरसता–समानता का भाव

श्रीराम शिला पूजन के कार्यक्रम देशभर में नगरीय–ग्रामीण–वनवासी–गिरवासी सभी क्षेत्रों के लाखों ग्राम व बस्तियों में प्रभावी रूप से सम्पन्न हुए। सभी जाति–बिरादरी व समाजों के बन्धु–भगिनी उसकी पूजा करते थे। सवा रुपए की राशि चढ़ाते थे। कहीं भी छुआछूत या अन्य किसी प्रकार का भेदभाव नहीं देखा गया। समूचा गाँव व बस्ती इस अवसर पर भगवान श्रीराम के नाम पर सर्व दूर एकत्व, समरसता व समानता के भाव से युक्त दिखा। इसी आधार पर लाखों समाज बन्धु–भगिनी विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ आये। 9 नवम्बर, 1989 को अयोध्या में अनुसूचित जाति के बन्धु श्री कामेश्वर चौपाल के कर–कमलों से शिलान्यास का पावन कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

सांस्कृतिक जागरण

श्रीराम खड़ाऊ पूजा के समय भी सारे देश में यही अद्भुत भाव प्रकट हुआ। ऐसा लगता था जैसे इन कार्यक्रमों ने सारे देश के हिन्दू समाज को एक चौखट पर लाकर

खड़ा कर दिया हो। देश भर में एक महान सांस्कृतिक जागरण के महापर्व के रूप में यह कार्यक्रम देखे गये। दीपावली के पर्याप्त पूर्व अयोध्या में सन्तों द्वारा वैदिक मन्त्रों के साथ अरणी मन्थन करके श्रीराम ज्योति प्रकटाई गयी।

श्रीराम ज्योति अयोध्या से सारे प्रान्तों को भेजी गयी। दीपावली के पूर्व हर घर व हर परिवार के पास राम-ज्योति थी। सारे देश में उस वर्ष दीपावली के दीप राम-ज्योति से ही प्रज्वलित किये गये।

देशभक्ति का ज्वार

इन कार्यक्रमों का सुपरिणाम था कि देश भर में देशभक्ति व राम-भक्ति का प्रबल ज्वार खड़ा हो गया। देश-भक्ति यानी राम-भक्ति, राम-भक्ति यानी देश-भक्ति बन गयी। कारसेवा में इसका साक्षात् स्वरूप प्रकट हुआ। देशभर की सभी जातियों, वर्गों, भाषा-भाषियों तथा प्रान्तों के महिला और पुरुष इस कारसेवा में उपस्थित हुए।

उत्तर प्रदेश की जनता ने कारसेवकों की सभी भेदभावों से ऊपर उठकर प्रभु श्रीराम के भक्तों के रूप में सेवा की। लोगों ने कारसेवकों-रामभक्तों को अपने घरों के भीतर ठहराया तथा घर के लोग घर के बाहर ठहरे। कारसेवकों के पैरों में पैदल चलने के कारण सूजन आ गयी थी, छाले पड़ गये थे, पैरों में घाव हो गये थे, थकान की तो सीमा ही टूट गई थी। गर्म पानी से पैरों की सफाई व सिकाई की, औषधि लगायी। उनके हाथ-पैरों को दबाया, ताजा भोजन कराया। सेवक और सेवित एक दूसरे की भाषा नहीं समझते थे, परन्तु भावों से सुपरिचित थे।

उत्तर में उत्तर प्रदेश तो कारसेवक एकदम तमिलनाडु के रामेश्वरम् व कन्याकुमारी से, केरल से, कर्नाटक से भी आये थे। कोई किसी की भाषा का एक शब्द भी नहीं जानते थे, रामेश्वरम् वाला बोलता है अम्मा, पानी। इसी से सारे भाव समझ में आ जाते थे। राम भक्त इतने भावुक होकर लौटे कि लौटकर अपने-अपने गाँव में भावुक होकर, रो-रो कर संस्मरण सुनाये। उत्तर -दक्षिण का भाव समाप्त हो गया। निरपेक्ष सेवा भाव देखकर वे अभिभूत हो गये।

रामराज्य सा भाव

किसी भी व्यक्ति ने एक भी रामभक्त से अथवा कारसेवक से उसकी जाति नहीं पूछी। इनमें सभी जातियों के, विविध भाषा-भाषी तथा सभी प्रान्तों के

राम मन्दिर आन्दोलन केवल एक मन्दिर निर्माण के लिए नहीं, बल्कि इस राष्ट्र-मन्दिर की अन्तश्चेतना को झकझोर कर राष्ट्र की चिति (आत्मा) को जगाने वाला था। भारत के इतिहास में राष्ट्र के आत्मविश्वास को दृढ़ता प्रदान करने वाला था जिससे भारत की वर्तमान और भावी पीढ़ी गर्व से कह सकें कि ''हम आज भी विजयी पुरखों की विजयी सन्तान हैं।''

कारसेवक थे। परन्तु सभी की जाति एक ही थी-रामभक्त।

रामभक्तों में बड़ी संख्या माता और बहनों की भी थी। माताएं-बहनें आभूषण धारण करके भी आई थीं। कारसेवक उल्टे-सीधे ऊबड़-खाबड़ जंगली राहों से समय-बेसमय भी अर्थात् दिन-रात चलकर आये थे। लेकिन इस विशाल महाकाय कार्यक्रम में एक भी लूटपाट, असुरक्षा या दुश्चारित्य आदि किसी भी प्रकार का अप्रिय समाचार या घटना नहीं घटी। बिल्कुल रामराज्य की तरह कारसेवक रामभक्त निश्चिन्त निर्भय थे-

बयरु न कर काहू सन कोई।
रामप्रताप विषमता खोई।।
दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।।

(उत्तरकाण्ड)

अपमान का प्रतीक ध्वस्त

30-31 अक्टूबर व 1 नवम्बर को कारसेवा हुई। 2 नवम्बर को राज्य सरकार ने रामभक्तों पर गोली चलवा दी। अयोध्या रक्तरंजित हो गई, फिर भी राम भक्तों के मन में श्रद्धा के भाव थे।

दमन से कुचली हुई अयोध्या ! तू उदास न हो।
हम अपने कफन ले, फिर वहीं से गुजरेंगे।।

पूज्य सन्तों की योजना से अस्थि-कलश यात्रा निकाली गई। 6 दिसंबर, 1992 को पुनः कारसेवा आयोजित की गई इसके पूर्व न्यायालय का निर्णय आने वाला था। परन्तु, उसे 11 दिसम्बर, 1992 तक के लिए सुरक्षित रख लिया गया। गुस्साए राम भक्तों ने विवादित ढाँचे को भूमिसात कर दिया। अपमान का प्रतीक ध्वस्त कर स्वाभिमान की दहलीज पर गौरव के कदम जमा दिये।

आज सभी प्रकार की न्यायिक, प्रामाणिकता तथा सहमति से सम्बन्धित बाधाएँ दूर हो चुकी हैं। उच्चतम न्यायालय का निर्णय प्रभु श्रीराम के पक्ष में आ चुका है और अब मन्दिर का पुनर्निर्माण प्रारम्भ हो गया है।

राष्ट्र की चिति को जगाने वाला

स्वातन्त्र्योत्तर काल में समाज जागरण का समूचे विश्व में यह राम-आन्दोलन का उपक्रम अद्वितीय था। श्रीराम मन्दिर निर्माण का उज्ज्वल दृश्य तो हमारी आँखों के सामने है। परन्तु यह दृश्य निर्माण होने में जो तन्त्र इसकी नींव में प्रयुक्त हुआ है वह इस अभियान की दृश्यादृश्य फलश्रुति है। इसलिए यह राम मन्दिर आन्दोलन केवल एक मन्दिर निर्माण के लिए नहीं, बल्कि इस राष्ट्र-मन्दिर की अन्तश्चेतना को झकझोर कर राष्ट्र की चिति (आत्मा) को जगाने वाला था। भारत के इतिहास में राष्ट्र के आत्मविश्वास को दृढ़ता प्रदान करने वाला था जिससे भारत की वर्तमान और भावी पीढ़ी गर्व से कह सकें कि ''हम आज भी विजयी पुरखों की विजयी सन्तान हैं।'' ●

(लेखक संघ के क्षेत्रीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख हैं)

मतांतरण में लगे गिरोह का भंडाफोड़

मूक-बधिर बच्चों और महिलाओं को बनाया निशाना

जबरन धर्म परिवर्तन मामले में उत्तर प्रदेश पुलिस के आतंकरोधी दस्ते (एटीएस) ने बीती 21 जून को मतांतरण कराने वाले एक गिरोह का भंडाफोड़ किया। यह गिरोह गरीब, लाचार महिलाओं और मूक-बधिर बच्चों को अपने जाल में फंसा कर कई वर्षों से मुसलमान बनाने के षड्यंत्र में लगा हुआ था।

एडीजी लॉ एण्ड आर्डर प्रशांत कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि दिल्ली स्थित बाटला हाउस के उमर गौतम और जामिया नगर के मौलाना जहांगीर आलम कासमी इस गिरोह के कर्ता-धर्ता थे। इनके पास से एक हजार नामों की एक सूची भी मिली है जिसमें उन्होंने नौकरी, शादी और धन का लालच देकर लोगों को मतांतरित किया।

जाँच में सामने आया कि हवाला के माध्यम से मतांतरण के लिए विदेशों से पैसा आ रहा था। उमर गौतम के खाते में विदेश से आए 1.50 करोड़ रुपये का पता चला है। इसके साथ ही बीते डेढ़ साल में धर्म परिवर्तन कराने का 17 पेज का एक लिखित विवरण भी मिला है। उत्तर प्रदेश एटीएस ने दोनों आरोपियों को रिमांड पर भेज कर उनके विरूद्ध विभिन्न धाराओं के अंतर्गत मामला दर्ज कर उक्त मामले की छान-बीन प्रारम्भ कर दी है।

कौन है उमर गौतम और जहांगीर

पकड़ा गया उमर गौतम पहले हिन्दू ही था। उसका वास्तविक नाम श्याम प्रताप सिंह चौहान था। उसका पूरा परिवार आज भी हिन्दू ही है। 20 वर्ष की उम्र में नैनीताल में (1984) पढ़ाई के दौरान एक मुस्लिम युवक के सम्पर्क में आने के बाद उसने इस्लाम कबूल कर अपना नाम मोहम्मद उमर गौतम रख लिया। उसके बाद वह धर्म परिवर्तन कराने वाले गिरोह के साथ काम करने लगा। जहांगीर मतांतरण की कानूनी कार्रवाई का काम देखता था।

मतांतरण पर महात्मा गांधी के विचार

मैं विश्वास नहीं करता कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का मतांतरण करे। दूसरे के धर्म को कम करके आंकना मेरा प्रयास कभी नहीं होना चाहिए।... मेरा मानना है कि मानवतावादी कार्य की आड़ में धर्म परिवर्तन रूग्ण मानसिकता का परिचायक है।

(यंग इंडिया-23 अप्रैल, 1931)

संस्था बनाकर किया मतांतरण

एडीजी लॉ एण्ड ऑर्डर के अनुसार आरोपी और उसका सहयोगी जामिया नगर से एक संस्था 'इस्लामिक दावाह सेंटर' चलाते थे। जिसका मुख्य उद्देश्य गैर मुस्लिमों का धर्म परिवर्तन कराना था। इस संस्था के माध्यम से उत्तर प्रदेश के कई जनपदों में अनेक दिव्यांग बच्चों का सामूहिक रूप से मतांतरण किया जा चुका है।

नोएडा डेफ स्कूल को बनाया शिकार

सबसे पहले नोएडा की डेफ सोसाइटी के 117 बच्चों को इस्लाम ग्रहण कराया, बाद में इनके निशाने पर अन्य जिलों के मूक-बधिर विद्यालय भी रहे। मूक बधिर न तो बोल सकते हैं, न ही सुन सकते हैं। ये एक विशेष प्रकार की साइन भाषा समझते है, जिससे किसी को इनके एजेंडे के बारे में शक भी नहीं होता था।

नोएडा डेफ स्कूल एक गैर सरकारी संस्था (एनजीओ) है, जहाँ दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

यहीं पर छात्रों को नौकरी एवं शादी का प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन कराया जाता था। ये दिव्यांगों में उनके परिवार के प्रति नफरत पैदा कर उन्हें बरगलाते थे।

इसके साथ ही कानपुर, वाराणसी, मथुरा,अलीगढ़ तथा गाजियाबाद सहित कई जिलों में इसी काम को कर रहे थे।

मतांतरण के मुख्य आरोपियों को ले जाती एटीएस

मतांतरण कानून और राज्यों की स्थिति

धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए देश के 9 राज्यों में मतांतरण कानून लाया जा चुका है। सबसे पहले ओडिशा (1967) में यह कानून लागू किया गया था। इसके अलावा मध्यप्रदेश (1968), अरुणाचल प्रदेश (1978), छत्तीसगढ़ (2006), गुजरात(2003), हिमाचल प्रदेश (2019), झारखंड (2017), उत्तराखंड (2018) और उत्तर प्रदेश (2020) में यह कानून लागू है। इन कानूनों में 1 से 5 वर्ष तक की जेल तथा 5 हजार से 50 हजार रुपए तक के आर्थिक दण्ड का प्रावधान है।

तमिलनाडु और राजस्थान में क़ानून वापस हो गया

तमिलनाडु में 2002 में मतांतरण क़ानून पास किया गया, लेकिन ईसाई मिशनरियों के लगातार-विरोध प्रदर्शन के बाद 2006 में इसे वापस ले लिया गया। इसी प्रकार राजस्थान में भी 2008 में यह विधेयक विधान सभा में पारित किया गया, लेकिन यह कानून नहीं बन सका क्योंकि उस पर राष्ट्रपति के हस्ताक्षर नहीं हो सके।

कनाडा और कतर तक संबंध

उक्त मामले में तीन और लोगों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार व्यक्तियों में से एक केंद्रीय महिला एवं बाल कल्याण मंत्रालय का इरफान शेख तथा राहुल भोला व मन्नू यादव हैं। ये दोनों भी मूक-बधिर हैं। इन्हें दिल्ली, महाराष्ट्र और हरियाणा से पकड़ा है। पूछताछ में इन्होंने बताया कि कनाडा और फिलीपींस से घोषित आतंकी बिलाल फिलिप से वे जुड़े हैं। बिलाल कतर में इस्लामिक ऑनलाइन विश्वविद्यालय चलाता था, जिसे पहले ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिबंधित किया जा चुका है।

धर्म परिवर्तन के लिए रिवर्ट पॉलिसी

धर्म परिवर्तन के लिए एक पॉलिसी बनाई जिसे नाम दिया 'रिवर्ट पॉलिसी'। इसके अन्तर्गत पहले गेट टू गेट के माध्यम से आपसी सम्पर्क बढ़ाना फिर मोटिवेशनल स्पीच से उन्हें यह समझाना कि ईश्वर एक ही है, वो भी खुदा। मतांतरण के लिए सबसे पहले लोगों को गीता पढ़ाई जाती फिर कुरान, फिर दोनों का अंतर बताया जाता। इसके बाद व्यक्ति का ब्रेनवॉश कर उसे धीरे-धीरे इस्लाम के प्रति आकर्षित किया जाता।

असम की संदिग्ध संस्था से भी संबंध

असम की संदिग्ध संस्था मरकज-उल-मारीफ से भी आरोपियों का संबंध सामने आया है। यह मुस्लिम उलेमाओं की संस्था है, जिसकी शाखा मुम्बई, मणिपुर, दिल्ली और देवबंद में भी है। उक्त संस्था के विरुद्ध असम में आतंकी फंडिंग और विदेशी मुद्रा अधिनियम के कई मामलों के केस दर्ज हैं। 1994 में उमर गौतम इसी संस्था का डायरेक्टर रह चुका है।

प्रयागराज : हिंदू से मुस्लिम बनी ज्योतिका

मतांतरण की शिकार अशोक नगर (प्रयागराज) की रहने वाली ज्योतिका दिल्ली में पढ़ाई के दौरान इन संस्थाओं के सम्पर्क में आई। विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर युवती का माइंड वॉश किया गया। इसी प्रकार कानपुर के घाटमपुर निवासी ऋचा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एमबीए किया। पढ़ाई के दौरान उसका प्लेसमेंट जयपुर में हुआ। कुछ दिन काम करने के बाद नोएडा आ गई। बाद में दिल्ली में उसका भी धर्म परिवर्तन कराया गया।

दिल्ली के जामिया नगर से मतांतरण के षड्यंत्रकारियों के पकड़े जाने से आज पूरे देश को यह स्पष्ट हो गया है कि मतांतरण का जाल कितना गहरा, व्यापक, घिनौना और राष्ट्रव्यापी है। ये लोग अभी तक भोले और मासूमों को अपना शिकार बनाते थे। अब वे मूक-बधिर बालकों को भी निशाना बनाने का अमानवीय अपराध कर रहे हैं। कई बच्चे लापता हैं। इनको आतंकी गतिविधियों में शामिल किए जाने की आशंका है। इनको विदेशों से भी पैसा मिल रहा है तथा मुस्लिम समाज का एक वर्ग इनका समर्थन भी कर रहा है।

इनका यह षड्यंत्र आज का नहीं है। इस्लाम के भारत में प्रवेश के साथ ही मतांतरण का कुचक्र शुरू हो गया था। इस षड्यंत्र का स्वरूप राष्ट्रव्यापी है तथा इसके कई रूप सामने आ चुके हैं।

आवश्यकता है कि सरकारें इस ओर गंभीरता से ध्यान दें। अतः केन्द्रीय स्तर पर कानून बनाने की मांग भी उचित ही है। ●

मतांतरण पर रोक हेतु बने केन्द्रीय कानून- विहिप

मतांतरण के इस घिनौने स्वरूप की व्यापक जांच के लिए नियोगी कमीशन जैसा जांच आयोग बनाना चाहिए जिसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण देश हो। नियोगी कमीशन और वेणु गोपाल कमीशन ने मतांतरण विरोधी केंद्रीय कानून बनाने की सिफारिश की थी। संविधान सभा के कई सदस्य भी इसी मत के थे। इसलिए केंद्र सरकार को अवैध मतांतरण रोकने के लिए एक कानून बनाने पर विचार करना चाहिए। मतांतरण के कारण देश विभाजन की एक त्रासदी झेल चुका है और जेहादी आतंकवाद की पीड़ा का सामना कर रहा है। अब भारत को इस मानवता विरोधी षड्यंत्र से मुक्त कराने का समय आ गया है।

- डॉ.सुरेन्द्र जैन
केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री, विहिप

आईएएस की बेटी तथा पूर्व मेयर की बहू लव जिहाद की शिकार

नाम बदलकर जाल में फंसाया

लखनऊ पुलिस ने 4 जुलाई को एक लकड़ी व्यवसायी आरिफ हाशमी को लव जिहाद के मामले में गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक (शहर) बोत्रे रोहन प्रमोद ने बताया कि आरिफ ने खुद को आदित्य बताकर एक रिटायर्ड आईएएस की विधवा बेटी से दोस्ती कर 2010 में विवाह कर लिया था। महिला का पहला विवाह आगरा के पूर्व मेयर के बेटे के साथ हुआ था, जिसकी 2005 में मृत्यु हो गई। कुछ महीने पहले ही महिला को अपने पति के मुसलमान होने का पता चला। तब आरिफ ने उस पर धर्म बदलकर इस्लाम अपनाने के लिए दबाव डालना, प्रताड़ित व मारपीट करना शुरु कर दिया।

महिला ने आरोपी आरिफ के विरुद्ध मारपीट, हत्या का प्रयास, दुष्कर्म, अप्राकृतिक कृत्य, लूटपाट, धोखाधड़ी और अवैध मतांतरण जैसे गंभीर आरोपों के साथ पुलिस में मामला दर्ज कराया। पुलिस ने आईपीसी की संबंधित धाराओं और मतांतरण विरोधी कानून के अंतर्गत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को आरिफ की कई तस्वीरें भी मिली हैं जिनमें वह 'समाजवादी' और 'आप' पार्टी के शीर्ष नेताओं के साथ दिखाई दे रहा है।

मुस्लिम महिला ने किया अपने पति और सास पर मुकदमा

दरगाह का फकीर कर रहा था महिलाओं का मतांतरण

मतांतरण से जुड़ा एक और मामला बीते दिनों सामने आया। लखनऊ के खुर्रम नगर की रहने वाली उम्मे कुलसूम ने इंदिरा नगर थाने में अपने पति और सास के विरुद्ध मतांतरण का केस दर्ज करवाया है। एफआईआर में बताया गया है कि बेंगलुरु सिटी के बिल्लाहाली कोस निवासी सैयद हसनैन अशरफ और उसकी सास शादिया हिन्दू महिलाओं को अपने जाल में फंसाकर धर्म परिवर्तन कराते हैं। इस काम में उनके रिश्तेदार भी शामिल हैं। उन्हें देश-विदेश से मतांतरण के नाम पर काफी पैसा भी मिलता है। सैयद अशरफ कर्नाटक स्थित 'खानकाहे अशरफिया हुसनिया कुतबे दरगाह' का एक फकीर है। दरगाह आने-जाने वाली गैर मुस्लिम महिलाओं को लव-जिहाद के माध्यम से वह अपने जाल में फंसाता और उनका धर्म परिवर्तन कर देश विरोधी गतिविधियों में उनका उपयोग करता था।

कुलसूम पर भी उसने चार हिन्दू महिलाओं के बहला-फुसलाकर लाने के लिए दबाव बनाया, ऐसा नहीं करने पर उसके पूरे परिवार को जान से मार डालने की धमकी दी। विरोध करने पर अशरफ ने उसे घर से निकाल दिया। फिलहाल इंदिरा नगर पुलिस ने उक्त मामले में धर्म परिवर्तन अधिनियम, दहेज प्रताड़ना समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

संस्कृति प्रश्नोत्तरी

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइये। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –
सामान्य–यदि 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
श्रेष्ठ– यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
उत्तम – यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. 14 वर्षों तक भरत ने श्रीराम की पादुकाएं सिंहासन पर रख कर किस स्थान पर रहते हुए अयोध्या का काम-काज संभाला?
2. द्रोणाचार्य के रचे किस व्यूह में अभिमन्यु ने वीरगति पाई?
3. ईरान का प्राचीन नाम क्या था?
4. मध्यप्रदेश और उड़ीसा में बहने वाली सबसे बड़ी नदी कौन सी है?
5. मातृभूमि की महिमा का बखान किस वैदिक-सूक्त में किया गया है?
6. स्वर्ण-युग कहे जाने वाले प्रसिद्ध मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की?
7. तिलिस्मी उपन्यास 'चन्द्रकान्ता संतति' किस प्रसिद्ध भारतीय लेखक की रचना है?
8. जर्मन पनडुब्बी की सहायता से वीर सावरकर को अंडमान से निकालने की योजना किस महान क्रांतिकारी ने बनाई थी?
9. चित्तौड़ में विजय-स्तम्भ का निर्माण कराने वाले महाराणा कौन थे?
10. बांग्लादेशी घुसपैठियों के अवैध कब्जे से वन, मठ व मंदिर की भूमि मुक्त कराने का अभियान किस राज्य में चल रहा है?

(उत्तर पृष्ठ क्र.6 पर)

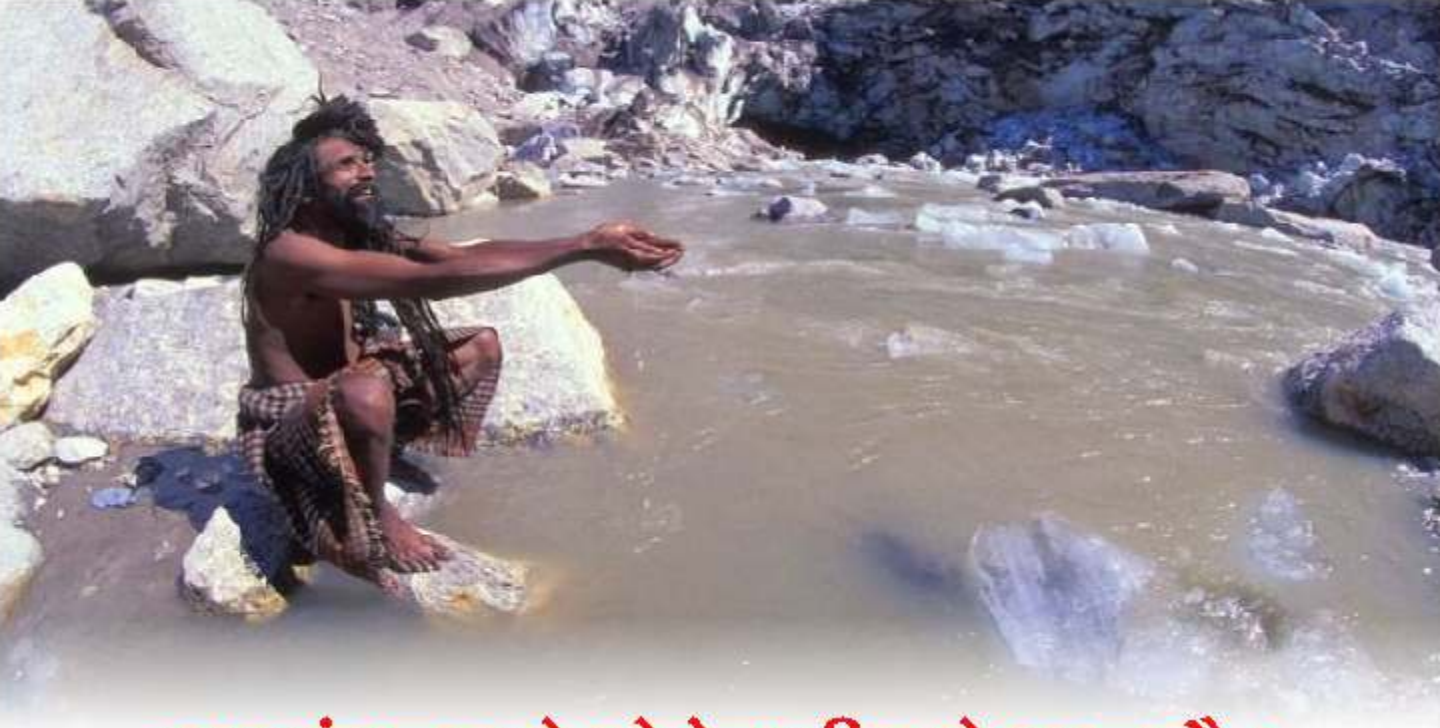

क्या गंगाजल से कोरोना ठीक हो सकता है !

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किया दावा

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सकों का दावा है कि गंगाजल न केवल कोरोना को ठीक कर सकता है, वरन 'डेल्टा प्लस' वैरियंट पर भी काम करेगा। विश्वविद्यालय के इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (आईएमएस) में हुए शोध से पता चला है कि गंगाजल से कोरोना का इलाज हो सकता है। उनके अनुसार गंगाजल में 'बैक्टीरियोफेज (जीवाणुभोजी)' नामक एक औषधीय तत्व पाया जाता है जो कोरोना जैसे संक्रामक रोगों को ठीक करने की क्षमता रखता है। विश्वविद्यालय के वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट प्रोफेसर वीएन मिश्र और उनकी टीम कोरोना पर 'वायरोफेज' नाम से शोध कर रही है। उन्होंने मात्र 20 रुपये की लागत से गंगाजल का नाक में छिड़कने वाला स्प्रे तैयार किया है। शोध के दौरान वैज्ञानिकों ने लगभग तीन सौ कोरोना पीड़ितों पर इस 'नोजल स्प्रे' का परीक्षण किया, जिसके बहुत सकारात्मक परिणाम आए हैं। इस स्प्रे का उपयोग प्रतिदिन चार-बार करने से कोरोना ठीक हो जाता है।

टीम का दावा है कि गंगा किनारे रहने वाले लेकिन गंगा में स्नान करने वाले 90 प्रतिशत लोग कोरोना से बचे हुए हैं।

गंगा किनारे रहने वाले 491 लोगों पर सर्वे किया गया था। सर्वे में स्पष्ट हुआ कि 274 लोग जो प्रतिदिन गंगा में नहाते हैं और गंगाजल पीते हैं, उनको कोरोना नहीं हुआ था।

आईसीएमआर ने नहीं किया सहयोग

विश्वविद्यालय के चिकित्सकों का यह शोध कार्य आगे नहीं बढ़ सका। एक तो संसाधनों की कमी थी, सरकार को या कहें कि आईसीएमआर (भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्) को संसाधन उपलब्ध कराने थे, परन्तु इसके उलट आईसीएमआर ने उनके दावे को रद्द कर दिया। आईसीएमआर की ओर से कहा गया कि ऐसी कोई भी क्लीनिकल स्टडी नहीं हुई है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि गंगाजल से कोरोना का इलाज किया जा सकता है। आईसीएमआर की 'एथिकल कमेटी' ने शोध को आगे बढ़ाने से रोक दिया।

उच्च न्यायालय ने मांगा जवाब

शोधकर्ताओं को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अपना शोधकार्य आगे बढ़ाने के लिए गुहार लगानी पड़ी है। उच्च न्यायालय ने आईसीएमआर और एथिकल कमेटी को नोटिस जारी कर 6 सप्ताह में जवाब मांगा है। इससे बीएचयू के चिकित्सक उत्साहित हैं। शोधकर्ता टीम की ओर से हाईकोर्ट में वरिष्ठ अधिवक्ता अरुण गुप्ता ने इस संबंध में एक जनहित याचिका प्रस्तुत की थी।

राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री से अपील

गंगा मामलों के विशेषज्ञ अरुण गुप्ता ने राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर गंगाजल के औषधीय गुण और बैक्टीरियोफेज पर अध्ययन करवाने की अपील की है। उनका मानना है कि गंगाजल पर और भी शोध करने की आवश्यकता है।

स्व.सोहन सिंह जी को किया याद

व्यवस्थाओं के माध्यम से देते थे संस्कार

श्री सोहन सिंह जी की छठी पुण्यतिथि पर 4 जुलाई को 'सोहन सिंह सेवा न्यास' की ओर से आयोजित एक वेबीनार को संबोधित करते हुए संघ के **वरिष्ठ प्रचारक एवं संघ की अ.भा.कार्यकारिणी के सदस्य श्री शंकरलाल ने कहा कि** सोहन सिंह जी संघ कार्य के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा करते थे। एक-एक बात की बारीकी से व्यवस्था करना उनके स्वभाव का अंग था। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन सादा व सरल जीया। वे कहते थे कि प्रचारक को किसी भी राजनेता के साधन, प्रभाव व धन का उपयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने स्वयं भी इस बात का जीवन भर ध्यान रखा।

प्रोफेसर सुरेन्द्र जैन ने सोहन सिंह जी के साथ अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वे व्यवस्थाओं के माध्यम से संस्कार देते थे। गहराई से एक-एक व्यवस्था पर स्वयं विचार करते और कार्यकर्ता को भी इसकी प्रेरणा देते थे। आज भी सोहन सिंह जी को याद करना प्रेरणा देता है।

उन्होंने सोहन सिंह जी को स्वयं में एक विश्वविद्यालय बताते हुए कहा कि उनके साथ बैठना ऐसा लगता था कि मानों अपने पिता या गुरु के पास बैठे हैं। वे प्रखर व्यक्तित्व के धनी, वाणी से ओजस्वी थे। एक-एक शब्द को जैसे नाप-तोल कर बोल रहे हों। वे कार्यकर्ता के साथ आत्मीयता रखते हुए उसकी चिंता करते थे।

अ.भा.विद्यार्थी परिषद के वरिष्ठतम कार्यकर्ताओं में से एक श्री राजकुमार भाटिया ने बताया कि सोहन सिंह जी कहते थे, '' किसी को आगे बढ़ाना हो, बड़ी जिम्मेदारी देनी हो तो धीरे-धीरे देनी चाहिए, इसमें जल्दबाजी करना ठीक नहीं।'' सोहन सिंह जी को व्यक्ति की परख रहती थी। कौन व्यक्ति किस कार्य के लिए योग्य है, इस पर वे विचार करने को कहते थे।

सोहन सिंह जी के साथ प्रचारक रहे डॉ.दीपक शुक्ला ने सोहन सिंह जी को कर्तव्यनिष्ठ बताते हुए कहा कि वे कोरी बातचीत में विश्वास नहीं करते थे। प्रत्यक्ष में काम होता हुआ दिखना चाहिए।

सोहन सिंह सेवा न्यास सामाजिक कार्यकर्ता रहे लोगों के कष्ट, अभाव, बीमारी आदि की स्थिति में सहयोग करने के उद्देश्य से गठित किया गया है। इसमें राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली के ऐसे लोग शामिल हैं जिनको सोहन सिंह जी का सान्निध्य और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था।

गो मांस बेचने पर सर्व समाज आक्रोशित

जैसलमेर कस्बे के नजदीक गांव सरदारगढ़ में कथित रूप से गाय के बछड़े को काटकर उसका मांस बेचने की घटना से क्षेत्र के लोग अत्यंत आक्रोशित हैं। सर्व समाज के लोगों ने दुर्गा मंदिर प्रांगण में विश्व हिन्दू परिषद व गोरक्षा दल के नेतृत्व में सभा कर घटना पर अपना रोष व्यक्त करते हुए गो हत्या करने वालों व गोमांस विक्रेताओं व क्रेताओं को तुरंत गिरफ्तार करने की मांग की।

सभा में संयुक्त व्यापार संघ, ग्राम पंचायत, जाट महासभा, विश्नोई सभा, राजस्थान ब्राह्मण महासभा, किराना यूनियन, भाजपा, भाजयुमो, बजरंग दल सहित सर्व समाज के प्रतिनिधि-अधिकारी उपस्थित थे।

बाद में सब लोग रोष मार्च निकालते हुए उप-तहसील कार्यालय पहुँचे और दोषियों की गिरफ्तारी तथा सजा देने संबंधी ज्ञापन दिया। थानाधिकारी मदनलाल विश्नोई से मिलकर प्रकरण की जांच गंभीरतापूर्वक करने तथा आरोपियों को अतिशीघ्र गिरफ्तार करने की मांग की गई।

ADARSH VIDYA MANDIR SHANKAR VIDYA PEETH,
MOUNT ABU (Raj.) -307501
(An English Medium Residential School Affiliated to CBSE)

Faculty Required

1. PGT Chemistry (M.Sc., B.Ed)
2. TGT English (B.A., B.Ed.)
3. Assistant Hostel Warden – 4 (Graduation)

Salary as per Qualification (Salary no bar for deserving candidates).

Preference will be given to those candidate having experience and good command over English.

Send your application along with bio-data and qualification documents to the office of the PRINCIPAL Latest by 31.07.2021 via Mail or by post.

Mahesh Agarwal
(Hon'ry Secretary)

Email – avmsvp@yahoo.com
Contact – (0) 9214174743 / 9214673582

मुस्लिम तुष्टीकरण की पराकाष्ठा

मदरसे को आवंटित की तालाब की जमीन

राजस्थान सरकार ने हाल ही में एक जलस्रोत की भूमि नियम विरुद्ध जाकर मदरसा (दारुल उलूम फलाहे दारेन) को आवंटित कर दी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जोधपुर तहसील के राजवा गांव के खसरा नं.225 की भूमि 'राजस्थान काश्तकारी अधिनियम' के प्रावधानों के अंतर्गत 'प्रतिबंधित भूमि' है, अर्थात् इस भूमि को किसी भी काम के लिए आवंटित नहीं किया जा सकता। यह भूमि वहीं पर स्थित एक तालाब के कैचमेंट एरिया में है तथा तालाब में पानी के आने का एकमात्र माध्यम है।

बात जब मुस्लिम तुष्टीकरण की आती है तो राजस्थान सरकार नियमों को ताक पर रखते हुए कार्य करती है। जब राज्य में जल संकट गहरा रहा है तो ऐसे में राज्य सरकार का यह कदम जनहित के विपरीत ही माना जाएगा।

मामला खुलने पर विश्व हिन्दू परिषद सहित 25 से अधिक संगठनों ने प्रशासन को ज्ञापन देकर जमीन आवंटन रद्द करने की मांग की है। इस आवंटन के विरोध में 10 से अधिक ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधियों ने स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल को ज्ञापन सौंपकर तुरंत कार्रवाई की मांग की है। एक सरपंच राजकुमार ने बताया कि इस जमीन से तालाब में पानी आता है। पास में ही ऐतिहासिक पाबू जी महाराज का पवित्र स्थान भी है। सरकार द्वारा बिना सोचे-समझे इस तरह के असंवैधानिक आवंटन का हम सब विरोध करते हैं।

बाल-प्रश्नोत्तरी परिणाम

16 जून,2021 के अंक पर आधारित बाल-प्रश्नोत्तरी के उत्तर बड़ी संख्या में पाथेय कण को प्राप्त हुए। प्रथम 12 विजेता बाल मित्रों (जिनके कम से कम 9 उत्तर सही हैं) के नाम इस प्रकार हैं -

1. दीपक सुथार, जहाजपुर (भीलवाड़ा)
2. भैरूसिंह डुलावत, गोगुन्दा (उदयपुर)
3. एम.पी.वार्ष्णेय, किशनगढ़ (अजमेर)
4. दीपक कर्णावत, ढाणी रामगढ़ (सवाईमाधोपुर)
5. मोना पटेल, मालाखेड़ा (अलवर)
6. निकिता शर्मा, काछवा (सीकर)
7. अस्मिता गौतम, मालपुरा (टोंक)
8. गोविन्द यादव, डीग (भरतपुर)
9. सुप्रिया शांडिल्य, देसूरी (पाली)
10. मनमोहन आमेरिया, जौहरी बाजार (जयपुर)
11. महावीर सोनी, बारां
12. कल्पेश राजपुरोहित, भीनमाल, जालौर

सहीउत्तर
1.(अ)
2.(ब)
3.(स)
4.(अ)
5.(ब)
6.(अ)
7.(द)
8.(अ)
9.(अ)
10.(स)

प्रथम 5 विजेताओं का पुरस्कार यथाशीघ्र उनके पते पर पाथेय कण कार्यालय द्वारा भेज दिया जायेगा।

तुलसीदास जयंती (श्रावण शुक्ल 7) पर विशेष

रामचरित मानस में संस्कार

● भरत राम कुम्हार

संस्कार की परिभाषा आद्य शंकराचार्य ने इस प्रकार दी है-''सद्गुणाधानम्, दोषापनयनम्, इति संस्कारः।'' संस्कारों से व्यक्ति देवत्व को प्राप्त करता है। यहां तुलसीदास जी द्वारा वर्णित संस्कारों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।

प्रातः उठते ही माता, पिता एवं गुरु को प्रणाम करना।

गुरु पितु मातु स्वामि सिख पालें।
चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें।।

गुरु, पिता, माता एवं स्वामी की दी गई सीख का पालन करने पर, कुमार्ग पर चलने पर भी गड्ढे में पैर नहीं पड़ता अर्थात् पतन नहीं होता।

अपनी जन्मभूमि अयोध्या के लिए राम कहते हैं-

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि।

यह सुन्दर नगरी अयोध्या ही मेरी जन्मभूमि है।

जद्यपि सब बैकुं ठ बखाना।

हालांकि सभी ने बैकुंठ का ही बखान किया है।

अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।

परन्तु बैकुंठ भी मुझे अयोध्यापुरी के समान प्रिय नहीं है अर्थात् जन्मभूमि बैकुण्ठ (स्वर्ग) से भी ज्यादा प्रिय है।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

दूसरों के हित के कार्य करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है। दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के समान कोई अधर्म नहीं है।

जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्याण।

किसी भी प्रकार से दिया दान कल्याण करता है।

(लेखक विद्या भारती, राजस्थान के अध्यक्ष हैं)

डॉ.मोहन जी भागवत का उद्बोधन

('मीटिंग ऑफ़ माइंड-ए ब्रिजिंग इनिशियेटिव' पुस्तक विमोचन कार्यक्रम)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत का हाल ही में दिया गया भाषण देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है। वे 4 जुलाई,2021 को दिल्ली के मेवाड़ संस्थान में मुस्लिम विचारक ख्वाजा इफ्तिखार अहमद की पुस्तक ''वैचारिक समन्वय : एक व्यावहारिक पहल'' के विमोचन के अवसर पर संबोधित कर रहे थे। पाठकों की मांग पर डॉ.मोहन भागवत का सम्पूर्ण भाषण यहां दिया जा रहा है।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के सभी पदाधिकारीगण, कार्यकर्तागण, पुस्तक के लेखक ख्वाजा साहब, उपस्थित सभी विद्वतजन, माता-भगिनी।

इमेज मेकओवर (छवि या धारणा में बदलाव) का प्रयास नहीं

ये ऐतिहासिक है कि नहीं मुझे मालूम नहीं। लेकिन सार्वजनिक रूप से इस प्रकार पुस्तक का लोकार्पण मेरे द्वारा यानि संघ के किसी अधिकारी द्वारा ये शायद पहली बार है। और इसकी अटकलें बहुत लगती हैं और लग रही हैं, ऐसा पता चला। इसलिए, मैं भाषण के प्रारंभ में ही उन सबको शांत कर देना चाहता हूं। ये कोई इमेज मेकओवर का एक्सरसाइज नहीं है। संघ क्या है, 90 वर्षों से पता है लोगों को। वही संघ है और संघ को कभी इमेज परवाह रही नहीं, क्योंकि हमको बाकी कुछ करना नहीं है। सबको जोड़ना है, अच्छा काम करना है तो रूप बदलकर जाने की जरूरत हमको नहीं पड़ती। हम वही हैं और क्योंकि हमारा संकल्प सत्य है, इरादा पक्का है, पवित्र है। किसी के विरोध में नहीं, किसी की प्रतिक्रिया में नहीं, तो दुनिया चाहे जो समझे हम तो अपना काम करते चले जा रहे हैं। और हमको पता है, केवल भरोसा नहीं, मेरे जैसे तो पक्का है कि हम जो करेंगे, उससे सबका भला होगा। किसी का बुरा नहीं होगा। इसलिए ये कोई इमेज बदलने का एक्सरसाइज नहीं। ये अगले चुनावों के लिए मुसलमानों के वोट पाने का भी प्रयास नहीं है। क्योंकि हम उस राजनीति में नहीं पड़ते, वोट की राजनीति, पार्टी पॉलिटिक्स, इसमें हम लोग नहीं पड़ते।

राष्ट्रहित के पक्षधर हैं

हां, हमारे कुछ विचार हैं। राष्ट्र में क्या होना चाहिए, क्या नहीं? और अब एक ताकत बनी है तो वो ठीक हो जाए, इतनी ताकत हमें जहां लगानी है चुनाव में भी, लगाते हैं ये बात जरूर है। लेकिन हम किसी के पक्षधर हैं इसलिए नहीं, हम राष्ट्रहित के पक्षधर हैं। उसके खिलाफ जाने वाली बात कोई भी करे, हम उसका विरोध करेंगे और उसके पक्ष में जाने वाली बात कोई भी करे हम उसका समर्थन करेंगे। हम पार्टी नहीं देखते। इसलिए ये कोई पॉलिटिकल एक्सरसाइज नहीं है। हम पॉलिटिक्स में नहीं पड़ते, वोट पॉलिटिक्स, वोट बैंक पॉलिटिक्स, पार्टी पॉलिटिक्स। उसमें हम जा सकते हैं, हमारी ताकत है। लेकिन हम नहीं जाएंगे क्योंकि हमने पहले से यह तय किया है। संघ का जन्म हुआ तब से।

मनुष्य जोड़ने का कार्य राजनीति से संभव नहीं

कुछ काम ऐसे हैं जो राजनीति नहीं कर सकती। कुछ काम ऐसे हैं जो राजनीति बिगाड़ देती है। मनुष्यों को जोड़ने का काम राजनीति से होने वाला नहीं है। राजनीति चाहे तो उस पर असर डाल सकती है, बिगाड़ सकती है, उतनी मात्रा में राजनीति की चिंता लोगों को जोड़ने वालों को करनी पड़ती है। वो कोई भी हो हम हों, या ख्वाजा साहब जोड़ने चले तो उनको भी चिंता तो करनी पड़ती है। परंतु राजनीति इस काम का औजार नहीं बन सकती। इस काम को बिगाड़ने का हथियार बन सकती है। इसलिए ये उसका भी कार्यक्रम नहीं है।

संवाद स्थापित करने का प्रयास

ये एक सीधी बात है। पहली बार ऐसी पहल हुई और बहुत तर्क के साथ और पूरे भूतकाल का विश्लेषण करते हुए जब ये बात आई कि ये डॉयलाग बनना चाहिए। पुस्तक मेरे पास आई तो मैंने देखी। मैंने सरसरी दृष्टि से देखने के बाद ख्वाजा साहब को कह दिया कि इसका विमोचन मैं करुंगा। बाद में तारीख तय की, कोरोना के कारण तारीख तीन बार आगे ले जानी पड़ी।

संगठित समाज अपनेपन से ही संभव

इस पुस्तक में एक प्रामाणिक आह्वान है। एकता का आह्वान, ख्वाजा साहब ने जो भाषण किया उसमें बहुत सारी बातें आ गईं। बिल्कुल साफ-साफ आ गईं। दिल से आह्वान है कि भाई हम एक हैं, हमको एक होना है। राष्ट्र की प्रगति संगठित समाज के अस्तित्व के बिना नहीं होती है। संगठित समाज यानि आपस में आत्मीयता से जुड़ा हुआ समाज। संगठन यानि कोई एक रचना नहीं। उस रचना के पीछे जो भाव है वो अपनेपन का होता है।

हिंदू-मुसलमान अलग नहीं 'पूजा के प्रकार से अलग होने की परम्परा नहीं है भारत में'

हिन्दू-मुसलमान एकता, हमारा तो विचार ऐसा है कि ये शब्द ही बड़ा भ्रामक है। ये दो है ही नहीं। एकता की बात क्या है? इनको जोड़ना क्या, ये जुड़े हुए हैं और जब मानने लगते हैं कि हम जुड़े हुए नहीं हैं, तब दोनों संकट में पड़ जाते हैं। बात यही हुई है। हम लोग अलग नहीं हैं, क्योंकि हमारे देश में ये परंपरा नहीं है कि आपकी पूजा अलग है, इसलिए आप अलग हैं। आपने कहा न कि आप निराकार में श्रद्धा रखते हैं। हम निराकार के साथ आकार की भी श्रद्धा रखते हैं। बात ऐसी है कि एक व्यक्ति के नाते मुझे मेरी श्रद्धा एक पर ही रखनी पड़ेगी हिन्दुओं में भी। अगर मैं निराकार मानता हूं तो मैं हिंदुओं के आकार भी नहीं मानूंगा। मेरे अकेले का जब तक प्रश्न है। लेकिन मेरे समाज में निराकार को मानने वाले भी लोग हैं। उनका मैं सम्मान करता हूं, उनकी श्रद्धा का आदर करता हूं। उनकी श्रद्धा का आदर मेरी भक्ति में कोई गड़बड़ नहीं होती, मैंने एक किस्सा सुना है कि एक रास्ते से हजरत मूसा गुजर रहे थे, वहां एक फटेहाल आदमी बैठा था। और वो कहता था कि भगवान मैं तुमको बुलाने से डरता हूं क्योंकि तुम आओगे उतनी दूर जन्नत से चलकर तो तुम्हारे पैर दबाने के लिए हाथ तो हैं, लेकिन लगाने के लिए मेरे पास तेल नहीं है। ऐसी बहुत सी बातें वो कह रहा था। तो हजरत मूसा गुस्सा हो गए क्योंकि वो भी निराकार की पूजा है। तो उन्होंने कहा तुम पागल हो क्या, भगवान ऐसे थोड़ी आता है। तुम अपने मन से कुछ भी बोलकर इसको कलंकित कर रहे हो। पागल जैसी बातें कर रहे हो चुप बैठो। तो उनके दिल में भगवान की आवाज उतरी और कहा कि उसको जो कहना है कहने दो, तुम्हारा ठीक है तुम समझते हो ना। वो अपनी समझ से कह रहा है। उसका दिल दुखा के तुम मेरी हस्ती को कलंकित कर रहे हो, इस अर्थ की कहानी मैंने पढ़ी है। भारत में भी ये मानते हैं हम, करते आए हैं। इतने देवी-देवता हैं और इतने आ रहे हैं नए-नए, पुराने विस्मृत होते चले जा रहे हैं। अब रुद्र और इंद्र इनकी पूजा कहीं होती नहीं। ठीक है जाकि रहे भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। इसमें झगड़ा करने की कौन सी बात है।

एकता का आधार है- हमारी मातृभूमि

हम लोग एक हैं और हमारी एकता का आधार है हमारी मातृभूमि। केवल हम इस पर रहते हैं, इस पर जन्मे हैं इसलिए नहीं, लेकिन ये मातृभूमि हमको हमारा ये स्वभाव देती है, सुजल-सुफल मलयज शीतल ये रही है परंपरा से। इसलिए यहां कभी झगड़ा करने की जरूरत नहीं पड़ी। इतना भरपूर ये देती है कि बिना झगड़ा किए हम साथ में रह सकते हैं। ये पुरानी बात थी, आज भी इसकी शक्ति ये है, हम इसका उपयोग नहीं कर रहे हैं। आज की हमारी पूरी जनसंख्या को ये भूमि आराम से पाल सकती है। भविष्य में खतरा है, उसको समझ कर ठीक करना पड़ेगा। लेकिन अभी भी स्थिति ये है कि ये भूमि हमें पाल सकती है। इसलिए हमको बाहर जाना नहीं पड़ा और इसका भूगोल ऐसा है कि पुराने जमाने में बाहर से किसी का आना मुश्किल था और आ गए, तो आओ भाई, रह जाओ तुम भी, ऐसा हमको रहना पड़ा। तो हमको ये कभी कल्पना नहीं है कि कोई दूसरा है, हमसे अलग है, भाषा भी पहले से अलग-अलग है. अथर्वेद में ऋचा है -जनं विभ्रति बहुधा, विवाचसम्, नाना धर्माणंम् पृथ्वी यथौकसम्।

विभिन्न पूजा पद्धति एक ही पूर्ण के अंश

'अनेक भाषाओं के बोलने वाले, अनेक धर्मों के मानने वाले'- यह आज की भाषा नहीं है हमारी। उपनिषदों में कथा है कि एक ज्ञानी व्यक्ति थे। उसके पास पांच लोग गए। एक पृथ्वी की पूजा करता था, एक अग्नि की, एक वायु की, पूछने के लिए कि किसका सही है। तो ज्ञानी व्यक्ति ने पूछा आप किसकी पूजा करते हो तो उसने कहा अग्नि की। हां, इसीलिए तुम्हारा सब कुछ ठीक चल रह रहा है, तुम्हारा कल्याण है, तुम्हारे घर में समृद्धि है। दूसरे को पूछा तुम? वायु। हां, इसीलिए तुम्हारा कल्याण हो रहा है। सबको यही कहा उसने। फिर

श्री राम बहादुर राय वरिष्ठ पत्रकार तथा राष्ट्रवादी चिंतक हैं। उनके द्वारा सरसंघचालक श्री मोहन भागवत के भाषण पर की गई टिप्पणी के अंश-

मोहन भागवत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पहले सरसंघचालक हैं, जो समाज में बनी हुई संघ की नकारात्मक छवि, खास कर जो विरोधियों ने बनायी है, को क्रमशः ध्वस्त कर रहे हैं। वे संघ को समाज के उस हिस्से में स्वीकृति दिला रहे हैं, जहां गलत धारणाओं के कारण विरोध था। उनकी यह विशेषता भी है कि वे निजी तौर पर नहीं बोलते। वे जो बोलते हैं, तो वह संघ का सोचा-समझा दृष्टिकोण होता है।

साल 2018 में दिल्ली के विज्ञान भवन में उन्होंने दो दिन व्याख्यान देने के बाद तीसरे दिन प्रश्नों के उत्तर दिये थे, इस कार्यक्रम में उनके विचार निर्विवाद रूप से स्वीकृत हुए। ऐसे संपर्क और संवाद की शुरुआत बालासाहब देवरस ने 1977 में की थी, जब इमरजेंसी के दौरान जमाते इस्लामी और अन्य संगठनों के लोग भी जेलों में बंद थे, तब संघ और जमात दोनों प्रतिबंधित थे, उस समय के संवाद से मुस्लिम संगठनों का कुछ दृष्टिकोण बदला, किंतु यह प्रक्रिया लंबी नहीं चल सकी, यदि यह सिलसिला आगे बढ़ता, तो शायद मुस्लिम मंच की जरूरत नहीं पड़ती, लेकिन संघ ने भारतीय मुस्लिमों को समझाने का प्रयास किया है, जिनके मन में कांग्रेस और कम्युनिस्टों ने गांठ बना दी, इस विमर्श में भारतीयता मूल बात है और धर्म दूसरे स्थान पर है।

मुझे ऐसा लगता है कि शुरू में ही हमने भारतीय मुस्लिम को एक इकाई के रूप में देखने की गलती की है, इस संदेश से वह बात भी दूर होती है। जिस प्रकार से हिंदू समाज में जाति-पाति है ,उसी तरह मुस्लिम और ईसाई समुदायों में भी जाति व्यवस्था है, उन्हें एक इकाई के रूप में न देख कर ऐसे देखा जाना चाहिए कि वे भारतीय समाज के हिस्से हैं, अगर ऐसी दृष्टि बनती है, तो फिर बहुत सारी जटिलताएं व बनी-बनाई धारणाएं टूटेंगी।

पत्रकार फिरोज बख्त अहमद की टिप्पणी के अंश

(पंजाब केसरी , दि. 7.7.21)

भारत के मुख्य इमाम उमैर अहमद इलयसी ने कहा कि लगभग पांच दशकों के बाद मोहन भागवत ने फिर एक बार सार्वजनिक तौर पर उन सभी आशंकाओं, संघ के प्रति विरोध के कारणों और संघ के उद्देश्य पर निर्णायक बातें की हैं। यही कारण है कि भागवत मुस्लिमों के दिल में भी अपनी जगह बना रहे हैं।

संघ के राजनीतिक हस्तक्षेप का पहला चरण छद्म धर्मनिरपेक्षता को परास्त करने का था। आज लगभग सभी राजनीतिक दल अपनी धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा को बदल रहे हैं। अल्पसंख्यक तुष्टीकरण और बहुसंख्यक की उपेक्षा, दोनों बातें जो पहले गैर-भाजपा दलों के आचरण में थी वह चमत्कारिक रूप से लुप्त होती जा रही हैं। यह संघ की वैचारिक जीत है। भागवत ने संघ के विचार को सामने रखकर इसे अपने इतिहास, विरासत और दृष्टि से परिभाषित करने की बात कहकर संघ विरोधियों के सामने चुनौती फेंक दी है।

विमोचित पुस्तक में दर्शाया गया है कि अब मुस्लिमों को राजनीतिक क्षितिज पर उभर रही और सफल होती भगवा विचारधारा को समझ उनके साथ मिलकर भारत को अग्रिम राष्ट्र बनाने में अपने योगदान की तलाश और उसको सुनिश्चित करना है।

से कंफ्यूज हो गए। सही किसका है? हंसकर उसने कहा – देखो भाई तुम अपनी-अपनी भावना से जिसकी पूजा करते हो, वो एक अंश है। वास्तव में जिस पूर्ण के ये अंग हैं, इनके द्वारा तुमको इसको देखने चाहिए। उसको नहीं देखते, इसलिए दूसरों की पूजा को लेकर तुम भ्रम में पड़ जाते हो।

'समान पूर्वजों के वंशज' होने के कारण मन में अपनापन आना चाहिए

ये हमारा देश है। ये हमारी परंपरा है। ये हमारी तहजीब है और ये हमारी मातृभूमि के कारण मिली है। ये हमारा पहला आधार है। और ये परंपरा दूसरा आधार है और तीसरा आधार है ही, हम समान पूर्वजों के वंशज हैं। ये विज्ञान से भी सिद्ध हो चुका है। 40 हजार साल पूर्व से हम भारत के सब लोगों का भारत के सब लोगों का डीएनए समान है। इस आधार पर आरूढ़ होकर हम जब विचार करते हैं तो मन में अपनापन आता ही है। उस अपनेपन के आधार पर एकता होती है। राजनीति के आधार पर नहीं होती और संघ पहले से ऐसा मानता है।

हिन्दुओं की दुरावस्था का कारण हिन्दू समाज की कमियां

खिलाफत आंदोलन के बाद हिन्दुत्व का शब्द, ये इतिहास बिल्कुल ठीक बताया आपने। संघ की विचार प्रक्रिया भी ऐसी ही चली। डॉक्टर हेडगेवार साहब ने कहा कि देखो भाई, हिन्दू अपनी दुरावस्था के लिए अंग्रेजों, मुसलमानों को दोषी मान रहा है, ये गलत बात है। हां, इतिहास में कुछ उपद्रव हुए, उसके कारण नुकसान हुए, ये बात ठीक है। आज भी हम कह सकते हैं ऐसे उपद्रव हुए। हम दोनों एक दूसरे के बारे में कह सकते हैं। लेकिन डॉक्टर हेडगेवार ने कहा कि तुम अपने देश में थे, तुम अपने देश के मालिक थे, तुम्हारी संख्या इतनी है, तुम्हारे पास इतने उच्च विचार हैं। फिर भी अपने घर में तुम्हारी ये हालत हुई। तुम दूसरों को कैसे दोष लगा सकते हो, तुममें कुछ कमी होगी उसको सुधारो। संघ का विचार ये है। संघ के बारे में अपने देश के तथाकथित अल्पसंख्यकों को, तथाकथित मैं इसलिए कह रहा हूं कि वह एक ही समाज के, हमारे अपने ही समाज के भाई हैं। ये वास्तविकता है। और कभी भी भाषा, प्रांत, धर्म संप्रदायों के नाम पर हमने किसी को कम या ज्यादा नहीं कहा। ये संघ की विचारधारा है।

मुसलमानों के मन में संघ के बारे में डर भरा गया

तथाकथित अल्पसंख्यकों के मन में ये डर भरा गया है कि संघ वाले तुमको खा जाएंगे। दूसरा एक डर लगता है कि मेजोरिटी देश में आप रहोगे तो आपका इस्लाम चला जाएगा। ये भी बताया जाता है। अन्य किसी देश में ऐसा होता होगा माइनॉरिटी, मेजोरिटी, हमारे यहां ऐसा नहीं है। हमारे यहां जो-जो आया है, वो आज भी मौजूद है। किसी भी कारण आया हो। लेकिन आया है, रहा है तो मौजूद है। और इस भूमि की परंपरा, यहां के समाज का स्वभाव और इस कारण उसने बनाया संविधान भी उनके यहां के अस्तित्व की गारंटी देता है। क्योंकि आज भी समाज वैसे मानता है। कुछ ज्यादतियां होती हैं मेजोरिटी से माइनॉरिटी की ओर, मेजोरिटी से ही उन आतताइयों का विरोध होता है।

'मुसलमान यहाँ नहीं रहेगा- यह कहने वाला हिंदू नहीं' - सभी सरसंघचालकों ने कहा

यहां मुसलमान नहीं रहेगा- कहने वाला हिन्दू नहीं, सभी सरसंघचालकों ने यही बात अपने शब्दों में कही। मैं बहुत आग बबूला होकर भाषण करके हिन्दुओं में पॉपुलर हो सकता हूं। लेकिन हिन्दू मेरा साथ नहीं देगा कभी क्योंकि वो आततताईत्व पर चलने वाला नहीं है कभी। वो जानता है कि कितना भी अलग है और अपना शत्रु भी है तो भी उसका जीव है तो उसको जीने का हक है। तो लड़ाई भी होती है और लड़ाई में हारने के बाद वो माफ करो कहता है तो उसको शरण देना है। ये परंपरा है। और इसलिए ये डर छोड़कर, मैंने दिल्ली के भाषण में भी कहा था। वहां मैंने कहा कि हिंदू कह दे कि यहां एक भी मुसलमान नहीं रहेगा, तो हिंदू हिंदू नहीं रहेगा। इसीलिए कहा था और ये मैंने संघ में पहली बार नहीं कहा है। डॉक्टर साहब के समय से हमारी चलती आई विचारधारा है। हर बात को बोलने का वक्त होता है। उन्होंने दूसरे शब्दों में कहा। गुरुजी ने और शब्दों में कहा, बालासाहब ने और शब्दों में कहा। ये चलते आया है। और संघ छोटा था तो उसकी बात सुनी नहीं गई। आज संघ इतना बड़ा है कि संघ के शीर्ष पर मुझे रखा गया है। इसलिए मैं बोलता हूं तो सारी दुनिया सुनती है। ये विचार मेरा नहीं है। ये विचार संघ की विचारधारा का अंग है।

सबके पूर्वज एक, समाज भी एक

हिन्दुस्तान एक राष्ट्र है। यहां हम सब लोग हैं। सबके इतिहास भी अलग-अलग होंगे।

लेकिन पूर्वज सबके समान हैं। स्वार्थ अलग-अलग होंगे, लेकिन समाज एक है। स्वार्थों पर एकता होती नहीं है, सौदे पर एकता नहीं होती। एकता, इस एकत्व के आधार को अपने मन में पक्का बैठाने से होती है। इश्यूज़ पर मत आपके अलग-अलग हो सकते हैं। प्रजातंत्र में व्यवस्था है, उनकी अभिव्यक्ति कर सकते हैं, उनके लिए संघर्ष कर सकते हैं, विजय पा सकते हैं, कोर्ट में जा सकते हैं, सब कर सकते हैं। लेकिन एक-आधे मामले में मेरा आपका मत अलग है और परस्पर विरोधी है, इसलिए हमारा समाज नहीं बदल रहा, हम एक ही समाज के हैं। इस बात को पक्का समझ कर हमको चलना चाहिए। पहल अनेक बार हुई।

इस्लाम आक्रामकों के साथ आया परन्तु उसे जोड़ने का प्रयास तभी से हो रहा है- सब संतों ने यही किया

अपने देश के इतिहास में अब लोगों को पता चले, इस ढंग से इस्लाम भारत में आया वो आक्रामकों के साथ आया। इतिहास का आपका भी इलाज नहीं, मेरा भी इलाज नहीं है। जिस दिन ऐसा हुआ, उस दिन से हिन्दू और जो हिन्दू नहीं (मुसलमान) उनको जोड़ने का उस दिन से प्रयास चला है।

आप गुरू नानकदेव जी की वाणी देखिए, उसमें कितनी बातें ऐसी हैं। हर संत की हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज के समकालीन तुकाराम महाराज और रामदास स्वामी दोनों के अभंग हैं। अभंगों में कहते हैं तुम अल्ला-अल्ला कर रहे हो तो अल्ला क्या है, वो तुमको मालूम नहीं है, वो हमको मालूम है। कोई अलग नहीं है क्यों झगड़ा करते हो। इस प्रकार के अभंग हैं।

जोड़ने का कार्य राजनीति द्वारा संभव नहीं, हमें जोड़ने के कार्य में डटे रहना है

ये सतत प्रयास रहा है। लेकिन क्यों नहीं हुआ आज तक? मेरा विश्लेषण ऐसा है कि ये राजनीति के द्वारा नहीं हो सकता, सत्ता के द्वारा नहीं हो सकता। ये तो हम समाज के समझदार लोगों को हौंसले के साथ लंबे प्रयास करने के बाद होगा। क्योंकि जो इतिहास दुर्भाग्य से घटा है वो लंबा है। जख्म हुए हैं, उसकी प्रतिक्रिया तीव्र है। सब लोगों को समझदार बनाने में समय लगता है। लेकिन जिनको समझ में आता है, उनको डटे रहना चाहिए। उनको आवाज बुलंद करनी चाहिए। इसके खिलाफ, इस एकता में बाधा लाने वाली, देशहित में बाधा लाने वाली बातें होती हैं तो हिन्दू के विरुद्ध हिन्दू खड़ा होता है। लेकिन ऐसा हमको पता नहीं। मैं भी इतना ही कहता हूं कि ऐसी कोई बात हो गई तो मुस्लिम समाज का समझदार नेतृत्व ऐसे आततायी तत्वों का निषेध कर रहा है, करता होगा अंदर, मुझे नहीं पता। बाहर नहीं आता। ये भी प्रचार का एक खेल है। जैसे आपको संघ के बारे में बताया गया। आप आएंगे अंदर तो आपको दिखेगा कि वह गलत है। वैसे हो सकता है कि हमको भी कई बातें पता चलती हैं, वो गलत हों। लेकिन दिखता तो है नहीं। इसलिए हम समझदार लोगों को बैठकर बातें करनी पड़ेंगी।

'तिरस्कार नहीं-संवाद' ही हल

दिल्ली के भाषण में जो मैंने कहा, मुझे पता था उसके बाद स्वयंसेवक भी कहेंगे कि आप कहां से कह रहे हैं। बंच ऑफ थॉट्स में हैं ये सारी बातें। और स्वयंसेवक ये जानता है कि हम हिन्दू संगठन है और हिन्दुओं को शक्तिशाली बनाना चाहते हैं। लेकिन हमारी दृष्टि यानि हिन्दू की दृष्टि है वो वसुधैव कुटुंबकम् है। हमारे देश के अपने लोगों को तो जो आपने कहा सॉल्यूशन वही है। डिस्कार्ड कभी सॉल्यूशन नहीं हो सकता, डायलॉग ही सॉल्यूशन हो सकता है। और कभी भी संघर्ष से नुकसान ही होता है। कभी न कभी एक-दूसरे को समझकर मिलकर अपने देश को बड़ा बनाने के लिए सबको साथ चलना ही है। ये बात अनेक बार हुई। लेकिन कई बार डायलॉग का एक अर्थ ऐसा भी मैंने सुना, सही है या गलत ये मुझे मालूम नहीं है। लेकिन सही है तो बड़ी भयंकर बात है। चर्च के पैराडाइम्स में डायलॉग शब्द आया है ऐसा कहते हैं। उसमें ऐसा है कि लोगों को कन्वर्ट करने के लिए तैयारी करने का समय मिले, इसलिए बातों में उलझा कर रखना, यह भी एक अर्थ होता है उसका। ऐसे भी किसी ने उपयोग किया होगा तो पता नहीं। लेकिन डायलॉग करने के पीछे स्वार्थ नहीं चाहिए, हमको कुछ पाना नहीं है। ये देश अपना है, ये समाज अपना है, उसकी भलाई के लिए ये करना आवश्यक है, कोई माने न माने हमको करना है। हमारा क्या होगा हमको परवाह नहीं। हमारा कुछ भी हो जाए, हमारे समाज का तो भला ही होगा। इस ढंग से खड़ा रहना पड़ेगा।

रास्ते अलग परन्तु मंजिल एक ही

एकता की आधार भूमि अपनी मातृभूमि, अपनी ये परंपरा-संस्कृति और हमारे समान पूर्वज और उनका गौरव। बाकी हमारे यहां सब स्वतंत्रता है, कुछ नहीं बदलना पड़ता है। सब मत, पंथ, सम्प्रदाय। हमारे यहां रामकृष्ण परमहंस जैसे संत उन्होंने प्रत्यक्ष उपासना करके यह देख लिया है, इस्लाम की भी उपासना उन्होंने की और अंतिम परिणीति देख ली प्रत्येक पंथ-संप्रदाय की और कहा- जोतो मत तो-तो पथ। रास्ते अलग-अलग हैं, मंजिल एक ही है। ये सत्य है यानि हमारे देश का विचार है। हमारी परंपरा है, हमारा सौभाग्य है। कहीं भी जाकर आप उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति करो, मन और बुद्धि के परे जाकर अनुभव करो तो आपको ये पता चलेगा। आज भी इसको बताने वाले हैं। आज भी ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि मुस्लिम फकीरों के शिष्य अच्छे-अच्छे हिंदू हैं, पहुंचे हुए फकीरों के। और हिन्दू संतों के मुसलमान शिष्य हैं। हिंदू संतों ने मुसलमान शिष्यों को जो मंत्र दिया है वो संस्कृत का नहीं दिया है वो कुरान-ए-पाक से निकालकर दिया है। ऐसे बहुत उदाहरण हैं।

मैं जानता हूं, जहां मैं पैदा हुआ हूं भारत में विदर्भ और नागपुर के आस-पास का इलाका। उसमें तो ऐसे मेरे आस-पास ही चार-पांच उदाहरण हैं। अब इसको हमको पहचानना चाहिए, इसको पकड़कर चलना चाहिए। और इसी दृष्टि के साथ चलना चाहिए।

रास्ता लंबा है आप तो कह रहे है मंजिल तक आ गए, ये मंजिल नहीं है लेकिन अब चलना यहां से प्रारंभ करना पड़ेगा, मंजिल बहुत दूर है। क्योंकि बहुत सारी बाधाएं हैं। लोगों के मन में अंधकार है, उसको दूर करना पड़ेगा। ऐसा हम चलेंगे तो खुराफात करने वाले खुराफातें तो करेंगे ही, तो उससे जो द्वेष उत्पन्न होता है, टेंशन उत्पन्न होता है, दंगे, उन सबका हमारे मन पर परिणाम न होने देते हुए सत्य और न्याय के साथ हमको आगे बढ़ना पड़ेगा। इसलिए लंबा चलना पड़ेगा, ये समझना पड़ेगा। आपका जो प्रामाणिक आह्वान है, उसकी मैं दाद देता हूं। आपने जो दो बातें कहीं हैं, उसको मैं मानता

हूँ। संघ उनको मानता है, इसलिए मैं भी मानता हूं। मैं संघ की पटरी में तैयार हुआ हूं। संघ मानता है। किसी की पूजा उसका अपना सवाल है और हर एक मनुष्य के अंदर (दिमाग) क्षमता अलग-अलग दी है तो उस प्रकार वो जानता है। प्रामाणिक प्रयास करेगा तो एक दिन पहुंचेगा वहां, अनेक रास्ते हैं। उसको लेकर किसी की श्रद्धा को हम भंग नहीं कर सकते, करना भी नहीं चाहिए। करेंगे तो पाप होगा और पाप का प्रायश्चित कभी न कभी करना पड़ेगा। परंतु ऐसा एक-दूसरे को समझकर हमको सच्चाई और न्याय के साथ खड़ा रहना पड़ेगा, देश की एकता-अखंडता के साथ खड़ा रहना पड़ेगा। ये देश हमारा है, समाज हमारा है। मत के नाते हो सकता है हमारा कोई मत हो, हमारा कोई धर्म हो, हमारी कोई पूजा हो, ठीक है। उसका अनादर इस देश में कभी नहीं होगा। उसके अनादर को जो प्रचलन डालने जाएगा, उसको बाहर जाना पड़ेगा कभी न कभी। ये पक्की बात है। और इसलिए हिंदुओं के मन में ये जो इतिहास हुआ है, लड़ाईयां हुईं। बाद में सब ठीक होने लगा, बीच-बीच में कट्टरपंथी आते गए और उल्टा चक्का घुमाते गए। ऐसे ही खिलाफत के समय हुआ। उसके कारण पाकिस्तान हुआ। स्वतंत्रता के बाद भी राजनीति के तहत आपको यह बताया जाता रहा कि तुम अलग हो, तुम अलग हो। तुम अपनी अलग पहचान छोड़ दोगे, पहचान छोड़ने की जरूरत नहीं है। पहनावा वगैरह सारी बातें यहां सबकी अलग-अलग हैं, पहले से है. यहां मुसलमानों के आने के पहले से है। इसलिए वो सब ठीक रखकर हम सब समाज के अंग हो ही सकते हैं और कहीं नहीं हो सकते, यहां हो सकते हैं। लेकिन ये डर जो बिठाया जाता है, उसके चलते फिर से चक्का उल्टा घुमाया जाता है। उस चक्कर से बचना और बचाना। ये हमको करना पड़ेगा। हम हैं अलग-अलग हमारी तहजीब है, परस्पर विरोध भी है। आर्य समाजी सगुण अवतारों को नहीं मानते। सत्यार्थ प्रकाश में टीका भी है, हिन्दू देवी-देवताओं पर टीका है, चाबुक लगे हैं। लेकिन हिन्दू समाज ने उसको कैसे लिया? ये एक शास्त्रार्थ है, बौद्धिक विश्लेषण है पढ़ो उसको। प्रैक्टिस करके देखो जो अनुभव आते है, वैसे मानो। तो आर्य समाजी भी हैं और मंदिर वाले भी हैं, सब प्रकार के लोग हैं। जैसे ये साथ चलते हैं, वैसे हमारी ही भारत माता के पुत्र, हमारी ही संस्कृति के विरासतदार, हमारे ही पूर्वजों के वंशज खून के अपने भाई मुसलमान साथ क्यों नहीं चल सकते? वो कैसे अलग हो गए? लेकिन इन सब पृष्ठभूमियों के कारण एक अलगाव और अविश्वास पैदा हुआ है। उसकी दूरी को पाटते समय हमको समाज के मन से ये सारा हटाना पड़ेगा और हटाने का मतलब छिपाना नहीं होता है। जो आपने कहा, खरी-खरी बात को जैसा है, वैसा समझना।

गौमाता पूज्य परन्तु लिंचिंग हिन्दुत्व के विरूद्ध, ऐसे मामले झूठे भी होते हैं

इसलिए हम कहते हैं - हिंदुस्तान हिन्दू राष्ट्र है, गौमाता पूज्य है। लेकिन लिंचिंग करने वाले ये हिंदुत्व के खिलाफ जा रहे हैं। वो आततायी हैं। कानून के जरिए उनका निपटारा होना चाहिए क्योंकि ऐसे केस बनाए भी जाते हैं तो बोल नहीं सकते, आजकल कहां सही है कहां गलत है। लेकिन कानून को अपना काम करना चाहिए। ठीक से तहकीकात करनी चाहिए, बिना पार्शियलिटी किए सबका न्याय करना चाहिए। और दोषी को सजा होनी चाहिए। हमको उसमें कोई गम नहीं। मैं कहता हूं, सार्वजनिक भाषण में मैंने कहा है। ये अगर हम करने लगेंगे तो बहुत अच्छी बात होगी। ये बात बिलकुल सही है आपकी कि आज अगर संघ के नाते अगर हम कुछ बात कहते हैं, अब ये बात मैं कह रहा हूं तो इसकी हिन्दू समाज में तो बहुत बड़ी चर्चा होगी। बहुत बड़ा वर्ग है जो इसका समर्थन करेगा। हमको कहेगा कि आपने बहुत अच्छा किया जो पहल की। ऐसा भी वर्ग है जो खराब नहीं है, अच्छे इंसान हैं। लेकिन वो कहेंगे कि बस आप भी भोले बन गए अब। ये जरूर कहेगा क्योंकि ठोकरे लगी हैं। तो कहेंगे कि अरे ऐसा कभी हुआ था क्या, ऐसा मामला नहीं है ये आप लोग नहीं समझते। तो चलेगा ये शास्त्रार्थ चलेगा।

संघ हिंदू समाज की भावना बोलता है भारत वर्चस्व की बात करनी होगी

एक बात है कि हिन्दू समाज की भावना संघ बोलता है। आज ये स्थिति है क्योंकि नीचे तक हमारे हमारे स्वयंसेवक हैं। समाज क्या बोलता है, समाज क्या सोचता है क्या नहीं, हमारे पास आता है। हम उसके अनुसार बताते हैं। उसके अनुसार मैं बता रहा हूं। हिंदू समाज अपने परंपरा, प्रकृति, बुद्धि, मन के अनुसार चाहता तो है, लेकिन करने की हिम्मत उसकी इसलिए नहीं होती कि यह सब बीच में है। उसकी हिम्मत बढ़ाने के लिए, उसका आत्मविश्वास, उसका आत्म सामर्थ्य बढ़ाने का काम संघ कर रहा है। संघ हिन्दू संगठन करता है, इसका मतलब बाकी लोगों को पीटने के लिए नहीं है। संघ हिन्दू समाज का आत्मविश्वास बने। एक ने पूछा कि आप क्या करने जा रहे हैं? बोला क्या होगा इससे? बोले इससे तो हिन्दू समाज दुर्बल होगा। मैंने बोला कमाल है, एक माइनॉरिटी समाज है मुसलमान नाम का, मैं इस पुस्तक का उद्घाटन कर रहा हूं। उसमें कोई डरता नहीं क्या होगा और तुम मेजोरिटी समाज के होकर डरते हो क्या होगा? अब ऐसा व्यक्ति एकता नहीं कर सकता जो डरता है। डर के मारे एक होना नहीं है, ये पक्की बात है। आप भी मत डरो। सत्ता आएगी और रहेगी तो भी आप मत डरो। एकता डर से नहीं होती। एकता प्रेम से होती है, अपनेपन से होती है, एकता निःस्वार्थ भाव से होती है। कुछ लोग है जो ये तर्क देते हैं कि हमारी सत्ता थी, आज हम फिर से राज करेंगे ये बात गलत है। अब डेमोक्रेसी है। कोई हिन्दू वर्चस्व की बात नहीं कर सकता, कोई मुस्लिम वर्चस्व की बात नहीं कर सकता। भारत वर्चस्व की बात सबको करनी चाहिए।

हिन्दू की व्याख्या

हम जब कहते हैं हिन्दुस्तान, हिन्दू राष्ट्र। उसका मतलब यही होता है। क्योंकि हिन्दू की हमारी व्याख्या तिलक लगाने वाला नहीं, स्नान करने वाला, पूजा करने वाला ऐसी नहीं है। जो भारत को अपनी मातृभूमि मानता है, जो भारत के पूर्वजों का विरासतदार है, संस्कृति का विरासतदार है वो हिन्दू है हमारे यहां। अभी कार्यकर्ताओं की बैठक चल रही थी, उसमें एक-दो मुस्लिम कार्यकर्ताओं से मेरा परिचय नहीं था पहले। उन्होंने अपना परिचय दिया कि इतने वर्षों से मैं शाखा में जा रहा हूं। हैं हमारे यहां, हम लिस्ट नहीं रखते अलग। किसी की नहीं रखते, ब्राह्मण की नहीं रखते, माली की, तेली की, मुसलमान की, किसी की भी नहीं रखते हैं। लेकिन देश भर में हैं। कभी-कभी समझदारी न होने से मुसलमान लोग जाते हैं उनको ज्वाइन करना

है तो उनको कहते हैं एमआरएम में जाओ। संघ में ज्वाइन करने के लिए कोई भी आ सकता है जो इस पर विश्वास रखता है, संघ के लिए हिन्दू है। और जो इस पर विश्वास नहीं रखता वो किसी का भी भक्त हो, बड़ी पूजा करता हो, लेकिन उसके लिए संघ में जगह नहीं। क्योंकि ये समाज, ये मातृभूमि, ये संस्कृति, ये पूर्वज, ये हिन्दुत्व की व्याख्या है हमारी। और इसलिए मैं मानता हूं कि इस आधार पर एक अपनापन बनाकर समाज को एक करने के पहले प्रयास का प्रारंभ आज हुआ है। ये पहल आप से हुई हमने बिलकुल स्वाभाविक रूप से उसका प्रतिसाद दिया है। हमको इसमें से कुछ पाना नहीं है। क्योंकि हम भी यही सोच रहे थे कि हमारी अब कुछ हैसियत बन गई संघ के नाते। हम अगर 50 साल पहले आते तो आप ऐसा देखते कि ये है कितने, अरे क्या फालतू। तुम हिन्दू नहीं, तुम संघ वाले हो कितने? पर आज ऐसा नहीं है तो इसलिए हमने भी ये प्रयास शुरू किया था।

शेष समाज भी हिंदू ही है

हमारे देवबंद के नदवी साहब मिले थे हमें। तो वो कोई दूसरी कल्पना करके आए थे मेरे बारे में, संघ वाला हूं इसलिए। लेकिन उनको थोड़ा अच्छा अलग अनुभव आया। तो उन्होंने कहा, ये आप लोग करेंगे क्या? करेंगे, करना ही पड़ेगा ना, हिन्दू संगठन होने की बात क्या है? बाकी जो समाज है वो हमारे लिए हिन्दू ही है। वो भी भारत का ही समाज है और बिना उसके भारत का भला नहीं हो सकता। यानि 20 करोड़ क्या, भारत का एक आदमी अगर अक्षम है, लंगड़ा है, अभाव ग्रस्त है तो राष्ट्र का परम वैभव हम तब तक नहीं कह सकते जब तक उसकी ये सारी बातें दूर न हों।

मिलकर देश को विश्व गुरु बनाना है शब्दों का झगड़ा छोड़कर भावना समझें

सर्वे अपि सुखिना संतु, सर्वे संतु निरामया... तो उन्होंने कहा बहुत सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे तो हमने कहा बेलेंगे। हम चर्चा करेंगे। एक-एक कदम हम सोच समझकर बढ़ाएंगे, आगे बढ़ा हुआ कदम हम पीछे नहीं लेते। संघ ने कभी ऐसा किया नहीं। जब तक ताकत नहीं तब तक कदम आगे नहीं बढ़ाएं। कई बार सुनने को मिलता है - आप देर से आए। ठीक है देर से आए, लेकिन दुरुस्त आए। और पीछे नहीं जाएंगे। इसलिए मेरी प्रार्थना केवल इतनी है, आपने बिलकुल खुलकर अपने हृदय की बात रख दी है। उस पर गौर करिए, हम सबको मिल कर इस देश को बनाना है। हम हिन्दू कहते हैं। आपको नहीं कहना है मत कहो, भारतीय कहो। नाम का, शब्दों का झगड़ा छोड़ो, भावना समझो। उसके आधार पर इस देश को विश्वगुरु बनाना, ये दुनिया की आवश्यकता है नहीं तो दुनिया नहीं बचेगी। और इसलिए ये अपना पवित्र कर्तव्य मानकर हम एक-एक कदम हौसले के साथ पूरे जोर के साथ आगे बढ़े, धीरे जाएंगे तो कोई बात नहीं, लेकिन पहुंचना एक दिन जरूर है। इसलिए मन का विचार पक्का रखिए, उसको बदलिए नहीं। उसकी परीक्षा बहुत कड़ी होगी, बहुत लंबी होगी। लेकिन हमको इस दिशा में चलना ही पड़ेगा। जितना जल्दी प्रारंभ करेंगे, उतना कम नुकसान होगा।

बस जैसा आपने एक शेर कहा और ये कहा कि यहां ठीक नहीं है, फिर भी कहता हूं। मैंने भी एक बात रखी इसके बारे में वो ठीक है कि नहीं मुझे मालूम नहीं। हमारे अकोला के विजयादशमी उत्सव में इमरजेंसी के बाद आरिफ बेग साहब को हमने अध्यक्ष के नाते बुलाया था तो उनके भाषण के अंत में उन्होंने कहा था। बड़ा प्यारा लगा - 'अंदाजे बयां चर्चे बहुत खूब हैं, मगर शायद ये उतर जाए तेरे दिल में मेरी बात' हिन्दुस्तान जिंदाबाद●

संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधव सदाशिव गोलवलकर एवं मुस्लिम विद्वान और पत्रकार डॉ. सैफुद्दीन जिलानी के मध्य हुए वार्तालाप (30 जनवरी, 1971) में श्री गोलवलकर जी के कथन के कुछ अंश -

हमारे धर्म और तत्त्वज्ञान की शिक्षा के अनुसार हिंदू और मुसलमान समान ही हैं। ऐसी बात नहीं कि ईश्वरी सत्य का साक्षात्कार केवल हिंदू ही कर सकता है। अपने-अपने धर्म-मत के अनुसार कोई भी साक्षात्कार कर सकता है। ...

हमें यह बात हमेशा ध्यान में रखनी होगी कि हम सबके पूर्वज एक ही हैं। हम सब उनके वंशज हैं। आप अपने-अपने धर्मों का प्रामाणिकता से पालन करें, परंतु राष्ट्र के मामले में हम सबको एक रहना चाहिए।...

सभी अपने-अपने धर्म का पालन करें। एक ऐसा सर्वसारभूत तत्त्वज्ञान है, जो केवल हिंदुओं का या केवल मुसलमानों का ही हो, ऐसी बात नहीं है। इस तत्त्वज्ञान को आप अद्वैत कहें या और कुछ। यह तत्त्वज्ञान कहता है कि एक एकमेवाद्वितीय शक्ति है, वही सत्य है, वही आनंद है, वही सृजन, रक्षण और संहार करती है। अपनी ईश्वर की कल्पना उसी सत्य का सीमित अंश है। अंतिम सत्य का यह मूलभूत रूप किसी धर्म-विशेष का नहीं, अपितु सर्वमान्य है। यही रूप हम सबको एकत्रित कर सकता है। सभी धर्म वस्तुतः ईश्वर की ओर ही उन्मुख करते हैं। अतः यह सत्य आप क्यों स्वीकार नहीं करते कि मुसलमानों, ईसाईयों और हिंदुओं का परमात्मा एक ही है और हम सब उसके भक्त हैं।...

आपस के पर्वों-त्योहारों में हम क्यों सम्मिलित न हों? होलिकोत्सव समाज के सभी स्तरों के लोगों को अत्यंत उल्लासयुक्त वातावरण में एकत्रित करने वाला त्योहार है। मान लीजिये कि इस त्योहार के समय किसी मुस्लिम बंधु पर कोई रंग उड़ा देता है, तो इतने मात्र से क्या कुरान की आज्ञाओं का उल्लंघन हो जाता है? इन बातों की ओर एक सामाजिक व्यवहार के रूप में देखा जाना चाहिए। हमारे लोग तो कितने ही वर्षों से मोहर्रम के सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित होते आ रहे हैं। इतना ही नहीं तो अजमेर के उर्स जैसे कितने ही उत्सवों-त्योहारों में मुसलमानों के साथ हमारे लोग भी उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते हैं। ...

मुस्लिमों ने इस देश पर आक्रमण किया, यह हम स्पष्ट रूप से बताएँ, परंतु साथ ही यह भी बताएँ कि वह आक्रमण भूतकालीन है और विदेशियों ने किया है। मुसलमान यह कहें कि वे इस देश के मुसलमान हैं और ये आक्रमण उनकी विरासत नहीं है।...

हम सभी को यह सत्य समझ लेना चाहिए कि हम इसी भूमि के पुत्र हैं। हम सब एक ही मानवसमूह के अंग हैं।...

संगति का प्रभाव

किसी गांव में एक कुख्यात चोर रहता था। उसने कई चोरियां की थीं। उसका एक दोस्त था, जो मन–ही मन उसे सुधारने की इच्छा रखता था।

एक दिन उसने अपने चोर दोस्त से कहा– 'मित्र! मैं तुम्हें एक ही बार में बहुत–सा धन कमाने का सरल उपाय बताता हूँ, फिर तुम्हें दूसरों को लूटने की जरूरत नहीं पड़ेगी।'

चोर उसकी बात सुनकर बड़ा उत्साहित हुआ। दोस्त ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा– 'गांव से बाहर जंगल की तरफ एक गुफा है, जहाँ कुछ लोग रहते हैं। वे गरीब दिखते हैं, पर उनके पास छुपा हुआ खजाना है, अगर तुम उस धन को प्राप्त कर लेते हो, तो तुम्हारी सभी समस्याएँ मिट जाएँगी, पर उस धन को पाने के लिए तुम्हें उनके साथ उस गुफा में रहना होगा। तुम्हें उनकी तरह बोलना, चलना, जीने का तरीका अपनाकर उनका विश्वास जीतना होगा। अगर तुम ऐसा कर सके तो तुम उस धन को पा सकते हो।'

दोस्त की बातें सुनकर चोर के मन में दौलतमन्द बनने की लालसा जाग उठी। गुफा के अन्दर जाने पर बहुत–से साधुओं को देखकर वह अचम्भित हो गया। वे सब ईश्वर की साधना में लगे थे। साधु साधना में इतने मग्न थे कि उन्होंने चोर की उपस्थिति पर ध्यान ही नहीं दिया। चोर उन साधुओं के साथ रहने लगा। साधु धर्मपरायण जीवन–यापन कर रहे थे। वे सुबह उठते, योग और ध्यान करते तथा दिनभर पूजा–पाठ में व्यस्त रहते। शर्त के अनुसार चोर भी वैसा ही करने लगा।

इस तरह कुछ दिन गुजरने पर चोर की लालची प्रवृत्ति मिट गई और वह यह भी भूल गया कि वह किस उद्देश्य से यहाँ आया था। एक दिन ध्यान लगाते समय उसे भगवान के दर्शन हुए। उसी क्षण उसके मन से बुरे भाव समाप्त हो गये और उसे ज्ञान हुआ कि ईश्वर से बढ़कर और कोई खजाना नहीं। ●

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- विजयनगर साम्राज्य के सर्वाधिक प्रतापी सम्राट।
- पुर्तगालियों सहित 42 विदेशी आक्रमणकारियों को भारत से बाहर खदेड़ने वाले।
- ये आन्ध्रभोज के नाम से भी विख्यात हैं।

(उत्तर : कृष्णदेव राय)

? बाल प्रश्नोत्तरी

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! पाथेय कण 1जुलाई, 2021 का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर व्हाट्सअप करें। अपना पता व उम्र भी लिखें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जायेंगे तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत भी किया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि– 5 अगस्त, 2021

1. असम के वर्तमान में मुख्यमंत्री कौन हैं?
(क) सर्बानंद सोनोवाल (ख) हिमंत बिस्वा सरमा
(ग) प्रफुल्ल कुमार महंत (घ) तरुण गोगोई

2. अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष कौन हैं?
(क) महंत नरेन्द्र गिरि (ख) महंत ज्ञानदास
(ग) महंत बलवंत सिंह (घ) महंत रामजी बापू

3. प्रसिद्ध तीर्थस्थल पंढरपुर महाराष्ट्र के किस जिले में स्थित है?
(क) लातूर (ख) नांदेड़ (ग) सोलापुर (घ) अमरावती

4. हैदराबाद रियासत का भारतीय संघ में कब विलय हुआ?
(क) 17 सित.,1948 (ख) 15 अग.,1947
(ग) 20 जुलाई,1948 (घ) 22 सित.,1948

5. मुस्लिम बहुलता के आधार पर पंजाब सरकार ने कौन सा नया जिला बनाया है?
(क) फरीदकोट (ख) पठानकोट
(ग) मालेरकोटला (घ) होशियारपुर

6. कोरोना काल में भारत की मदद के नाम पर करोड़ों रुपये जुटाने वाला आतंकी गिरोह कौन सा है?
(क) इमाना (ख) लश्कर–ए–तैयबा
(ग) आईएसआईएस (घ) आईसीएनए

7. प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर भारत के किस राज्य में स्थित है?
(क) सिक्किम (ख) असम
(ग) मेघालय (घ) मणिपुर

8. भारतीय सिन्धु सभा द्वारा 16 जून,2021 को महाराजा दाहरसेन का कौन सा बलिदान दिवस मनाया गया?
(क) 1309वां (ख) 1300वां
(ग) 1321वां (घ) 1299वां

9. हैदराबाद सत्याग्रह में शहीद होने वाले बालक शांतिप्रकाश मूलतः कहाँ के रहने वाले थे?
(क) गुरुदासपुर (ख) अमृतसर
(ग) चंडीगढ़ (घ) जालंधर

10. भगवान विट्ठल को समर्पित पंढरपुर पालकी का शुभारम्भ किस स्थान से होता है?
(क) लातूर (ख) पुणे (ग) जेजुरी (घ) आलंदी

उत्तर शीट – 1.( ) 2.( ) 3.( ) 4.( ) 5.( )
6.( ) 7.( ) 8.( ) 9.( ) 10.( )

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

8

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

सुभाष कटक लौट आये... पिता पुत्र पर बहुत नाराज हुए...

दो वर्ष बाद पिता के प्रयासों से सुभाष को पुनः कालेज में प्रवेश मिल गया

सुभाष बाबू ने (1919 में) बीए परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की

पिता ने सुभाष से बात की... किंतु वो असहमत थे...

युवा सुभाष का आत्मविश्वास तिलमिला उठा...

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
16-31जुलाई, 2021

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
1 से 15 अगस्त, 2021 (श्रावण कृ.8 से श्रावण शु.7, वि.सं. 2078)

जन्म दिवस

1 अगस्त (1882) – राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जयंती
2 अगस्त (1861) – आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय जयंती
3 अगस्त (1886) – मैथिलीशरण गुप्त जयंती
12 अग. (1919) – डा.विक्रम साराभाई जयंती
13 अग. (1638) – वीर दुर्गादास राठौड़ जयंती
15 अग. (1872) – महर्षि अरविन्द जयंती
श्रावण कृ.9(2 अग.)– 8वें गुरु हरकिशन जयंती
श्रावण शु.7 (15अग.) – गोस्वामी तुलसीदास जयंती(1511)

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

5 अगस्त (2005) – बाढ़ पीड़ितों की रक्षा में मनोज चौहान का बलिदान
11 अग. (1908) – क्रांतिकारी खुदीराम बोस की शहादत
13 अग. (1795) – महारानी अहिल्याबाई होल्कर की पुण्यतिथि
14 अग. (1915) – सरदार बन्ता सिंह की शहादत
15 अग. (1942) – देवशरण सिंह, फुलेना प्रसाद, उदयचन्द की शहादत
15 अग. (1947) – सरदार अजीत सिंह का महाप्रयाण

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

2 अगस्त (1954) – पुर्तगालियों के अधिकार से दमन-दीव की मुक्ति
5 अगस्त (2020) – राम मंदिर शुभारम्भ दिवस (अयोध्या में)
5 अग.(2019) – कश्मीर से अनुच्छेद 370 तथा 35ए हटा, पड़ोसी देशों से आए शरणार्थियों के लिए संसद में सीएए पारित
8 अगस्त (1509) – श्रीकृष्ण देव राय का राज्याभिषेक
9 अगस्त (1925) – काकोरी कार्रवाई
9 अगस्त (1942) – भारत छोड़ो आंदोलन (सम्पूर्ण देश में प्रारम्भ)
12 अगस्त – अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस
14 अग.(1947) – अखण्ड भारत स्मृति दिवस
15 अग.(1947) – खण्डित भारत की स्वतंत्रता

पंचांग- श्रावण (कृष्ण-पक्ष)
युगाब्द-5123, वि.सं.-2078, शाके-1943
(25 जुलाई से 8 अगस्त,2021)

पंचक प्रारम्भ - 25 जुलाई (रात 10:48 बजे), **चतुर्थी व्रत**- 27 जुलाई, **नाग पंचमी**-28 जुलाई, **पंचक समाप्त**-30 जुलाई (दोपहर 2.02 बजे) **रोहिणी (जैन) व्रत**- 3 अगस्त, **कामिका एकादशी व्रत**-4 अगस्त, **प्रदोष व्रत**-5 अगस्त, **देवपितृ कार्य अमावस्या**-8 अगस्त

ग्रह स्थिति
चन्द्रमा : 25 जुलाई **मकर** राशि में, 26-27 जुलाई **कुंभ** में, 28 से 30 जुलाई **मीन** राशि में, 31 जुलाई व 01 अगस्त **मेष** राशि में, 2 से 4 अगस्त उच्च की राशि **वृष** में, 5-6 अगस्त **मिथुन** में तथा 7-8 अगस्त स्वराशि **कर्क** में गोचर करेंगे।

श्रावण कृष्ण पक्ष में **वक्री गुरु** और **शनि** पूर्ववत कुंभ व मकर राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी वृष व वृश्चिक राशि में बने रहेंगे। **मंगल** व **शुक्र** सिंह राशि में तथा **सूर्य** कर्क राशि में स्थित रहेंगे। **बुध देव** 25 जुलाई को प्रातः 11.41 बजे मिथुन से कर्क राशि में तथा 8 अगस्त को रात्रि में 1.34 बजे कर्क से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे।

शत शत नमन

जन्म दिवस

महान रसायनशास्त्री
आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय
2 अगस्त

(1861-1944)

आठवें सिख गुरु
गुरु हरकिशन जी
2 अगस्त

(1656-1664)

वीर क्षत्रिय योद्धा
दुर्गादास राठौड़
13 अगस्त

(1638-1718)

पुण्यतिथि

प्रसिद्ध क्रांतिकारी
सरदार अजीत सिंह
15 अगस्त

(1881-1947)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 जुलाई, 2021 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,
_____
_____
_____